मालिकुलमुल्क इमाम मेहदी हज़रत रियाज़ अहमद गौहरशाही

रुख़सार-ए-रियाज़

तेरे जमाल से आँखों को नशा हो जाये
तेरे ख़्याल से लमहों को नशा हो जाये

(यूनुस अलगौहर)

रियाज़
मालिकुलमुल्क

रौनक़े क़सरे रियाज़, मशकूरे बंदए रियाज़

शाहीन-ए-रियाज़

कोई क्या डराएगा इनको भला
जो गौहर की तेगो़फ़सां हो गए
बताए जो यूनुस ने अग़राज़े गौहर
मक़ासद सब ही के अ़याँ हो गए

यूनुस अल्गौहर

वेबसाइट : www.GoharShahi.com

संकलित द्वारा
मेहदी फाउंडेशन इंटरनेशनल

Printed in Thailand
First Edition 500 Copies
17-07-2003

माशूक़ेमन हज़रत रियाज़ अहमद गौहरशाही

तमहीद

शायेरी मुहब्बत के लतीफ़ जज़्बों की अक्कासी का ज़रीआ ठहरी। मुहब्बत के लतीफ़ जज़्बों को जहाँ नसर (गद्य) में बयान करने के लिए सैंकड़ों शब्दों की ज़रुरत होती है वहाँ शायेरी उन जज़्बों को चंद लफ़्ज़ों में निहायत नफ़ासत से बयान कर देती है। एक अर्सा तक शायेरी महज़ मुहब्बत के जज़्बों के इज़हार का ज़रीया ही बनी लेकिन वक़्त के नशीबोफ़राज़ ने शायेरी को दीगर हक़ायेक़ के इज़हार का ज़रीया भी बना दिया। इस तरह शायेरी का दामन कुशादःतर होता गया। शायेरी की अज़मतोअसमत को उश्शाक़ ने इश्क़ हक़ीक़ी से मामूर कर दिया। तसव्वुफ़ के दक़ीक़ कुल्लियात उश्शाक़े हक़ीक़ी ने मनज़ूम अंदाज़ में पेश कर के शायेरी की तहारत को चार चाँद लगा दिये। हज़ूरपाक के दौर में अरबिस्तान में शोअ़रा का ज़ोरोशोर था। एक से बढ़ कर एक आलिमो फ़ाज़िल मौजूद था और इसी बिना पर आलिमो फ़ाज़िल ने उलमा को घमंडी बना दिया था। इसी घमंड को ख़ाकस्तर करने के लिए अल्लाह ने कुरान मजीद को मनज़ूम अंदाज़ में नाज़िल करके उन शोअरा के कलाम को मात दी। जभी तो उस दौर के शोअरा ने कुरानी मंनज़ूम अंदाज़ और अल्फ़ाज़ की बेमिसाल तराकीब देखकर बरमला कहा कि यह तो निरी शायेरी है। हज़ूरपाक ने अरबिस्तान के वासियों को पैग़ाम`हक़ सुनाया, कुछ लोग हलक़ा बगोशे इसलाम होकर तौहीद के मतवाले हुए और कुछ लोग हज़ूरपाक की शख़्सियत के सेहर में गिरफ़तार हो कर हुस्ने मुस्तफ़ा के असीर हुए। हुब्बे मुस्तफ़ा में गिरफ़तार क़लूब ने इज़हारे मुहब्बत का ज़रीआ शायेरी बनाया। कहते हैं जब हस्सान बिन साबित हज़ूरपाक की शान में क़सायेद लिखते तो हज़ूरपाक उनको मिम्बर पर बैठा कर क़सायेद सुनते और कहा करते कि ''जिब्राईल तू ज़मीन पर आ और हस्सान का साथ दे।''

मुतअद्दिद फ़ुक़रा और औलिया उज़्ज़ाम ऐसे हैं जिन्होंने तालीमाते तसव्वुफ़ की इशाअत के लिए फ़क़त शायेरी को ही ज़रीआ बनाया। जलालुद्दीन रुमी की मस्नवी तरीक़त की तालीमात से मामूर है। उनके अक़ीदतमन्द कहते हैं कि मौलाना जलालुद्दीन रुमी की मस्नवी फ़ारसी का कुरान है। मौलाना जामी, शरफ़ुद्दीन बसीरी, हाफ़िज़ शीराज़ी ओर शेख़ सअ़दी समेत कई आशिक़ाने मुहम्मद (स.) ने इज़हारेइश्क़ का ज़रीआ शायेरी को ही बनाया। जिनको पढ़कर आज भी असीराने इश्क़ रमूज़े इश्क़ सीख रहे हैं। वादिये कशमीर के बुज़ुर्ग जनाब मुहम्मद बख़्श ने सैफ़ुल मलूक लिखकर तरीक़त की मनज़ूम तालीम फरमाई। सुल्तान हक़ बाहू ने किसी शख़्स को ज़ाहिर में फ़ैज़ नहीं दिया अल्बत्ता अबियाते बाहू रक़म फ़रमा कर करिशमाती मन्ज़ूम तालीमे फ़क़र के ख़ज़ाने निछावर किये। अमीर ख़ुसरु ने अपने पीरो मुर्शिद के इश्क़ की दास्तान का जामा भी शायेरी को ही बनाया। बाबा फ़रीद ने इश्क़े मुर्शिदी का अमीन शायेरी को ही बनाया। अल्लमा इक़बाल ने मुसलमानों की हालते ज़ार देख कर बज़रिये शायेरी ही तख़य्युले मेहदी से इस क़ौम को बेदार करने की कोशिश की। अल्लामा इक़बाल ने मुसलमानों को आमदे मेहदी और ज़हूरे मेहदी की निशानियों का शायेरी में इज़हार किया।

यही वजह है कि मेहदी अल्मुंतज़र सैयदना गौहरशाही ने किताब दीनेइलाही में चाँद, सूरज और हज्र अस्वद की तसावीर के साथ अल्लामा इक़बाल के उन मुतल्लुक़ा निशानियों के आसार के हवाले दिये।

सबसे बढ़कर मेहदी अल्मुंतज़र सैयदना रियाज़ अहमद गौहरशाही ने भी शायेरी को इज़्ज़त बख़्शी। माशूक़ेमन सैयदना गौहरशाही फ़रमाते हैं कि जब हम लाल बाग में मसरुफ़े इश्क़ थे तब ही असदुल्लाह ख़ाँ ग़ालिब और हज़रत अल्लामा इक़बाल सरकार गौहरशाही से फ़ैज़ हासिल करने के लिये हाज़िर हुए और फ़ैज़ पाकर बेक़रार अरवाह को क़रार नसीब हुआ। ग़ालिब और इक़बाल को अपनी शायेरी का मुद्दा और गौहर मतलूब मिल गया। मुहम्मद यूनुस अल्गौहर के नन्हें क़ल्ब में भी हुस्ने गौहरशाही की किरन तुलूअ़ हूई और उसने अपने इन लतीफ़ जज़बात का ज़रीया भी शायेरी को ही बनाया। महसूस होता है कि यूनुस की शायेरी में माशूक़ेमन गौहरशाही के इश्क़ के जज़्बात ही नहीं बलकि सैयदना गौहरशाही की जानिब से इल्क़ा किये गये इसरार भी जलवागर हैं। मेरा ईमान है कि मुहम्मद यूनुस अल्गौहर के हिदायत याफ़्ता होने और उसकी शायेरी अमर होने के लिये यही काफ़ी है कि मेहदी अल्मुंतज़र सैयदना गौहरशाही ने यूनुस अल्गौहर की ग़ज़ल के एक शेअ़र को दीने इलाही में शामिल कर दिया। दीने इलाही में शामिल शेअ़र दर्जज़ेल है।

चाँद, सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर .... है सबूतेहक़ तेरा इस दिल में आ जाने का नाम

इस शेअ़र को दीने इलाही में शामिल करके सैयदना गौहरशाही ने तसदीक़ फ़रमा दी कि यूनुस के क़ल्ब में सरकार गौहरशाही का जलवा शम्माए इश्क़ रोशन किये हुए है। बहुत से लोग यूनुस को काफ़िर, मुल्हिद और गुस्ताख़ कहते हैं लेकिन हम समझते हैं कि सरकार गौहरशाही ने यूनुस अल्गौहर के मुहब्बेगौहरशाही होने की तसदीक़ फ़रमा दी। लीजिये इस शायेरी से लुत्फ़ अंदोज़ हों और देखें कि हमारे दावे में कितनी सच्चाई है।

अमजद गौहर (अरब अमीरात)

मेहदी फाउंडेशन इंटर नेशनल

अपने पीरो मुर्शिद के इश्क़ की दास्तान का जामा भी शायरी को ही बनाया। बाबा फरीद ने इश्क़े मुर्शदी का अमीन शायरी को ही बनाया। अ़ल्लामा इक़बाल ने मुसलमानों की हालतेज़ार देखकर बज़रिया शायरी ही तख़ैयुले मेहदी से इस क़ौम को बेदार करने की कोशिश की। अ़ल्लामा इक़बाल ने मुसलमानों को आमदे मेहदी और ज़हूरे मेहदी की निशानियों का शायरी में इज़हार किया। यही वजह है कि मेहदी अल्मुंतज़िर सैयदना गौहरशाही ने किताब दीने इलाही में चांद, सूरज और हज्रअस्वद की तसावीर के साथ अ़ल्लामा इक़बाल के उन मुतल्लिक़ा निशानियों के अशआ़र के हवाले दिए। सबसे बढ़कर मेहदी अल्मुंतज़िर सैयदना रियाज़ अहमद गौहरशाही ने भी शायरी को इज़्ज़त बखशी। माशूक़ेमन सैयदना गौहर शाही फरमाते हैं कि जब हम लाल बाग़ में मसरूफे इश्क़ थे तब ही असदुल्लाह ख़ान ग़ालिब और हज़रत इक़बाल सरकार गौहर शाही से फैज़ हासिल करने के लिए हाज़िर हुए और फैज़ पाकर पेक़रार अर्वाह को क़रार नसीब हुआ। ग़ालिब और इक़बाल को अपनी शायरी का मुद्दुआ़ और गौहरे मतलूब मिल गया।

मुहम्मद यूनुस अल्गौहर के नन्हें क़ल्ब में भी हुस्ने गौहर शाही की किरन तुलूअ़ हुई और उसने अपने इन लतीफ़ जज़बात का ज़रिया भी शायरी को ही बनाया। महसूस होता है कि यूनुस की शायरी में माशूक़ेमन गौहर शाही के इश्क़ के जज़बात ही नहीं बल्कि सैयदना गौहर शाही की जानिब से इल्क़ा किए गए इसरार भी जलवागर हैं। मेरा ईमान है कि मुहम्मद यूनुस अल्गौहर के हिदायत याफता होने और उसकी शायरी अमर होने के लिए यही काफ़ी है कि मेहदी अल्मुंतज़िर सैयदना गौहर शाही ने यूनुस अल्गौहर की ग़ज़ल के एक शे़र को दीने इलाही में शामिल कर दिया। दीने इलाही में शामिल शे़र दर्जज़ेल है।

चांद सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर
है सबूतेहक़ तेरा इस दिल में आ जाने का नाम

इस शे़र को दीने इलाही में शामिल करके सैयदना गौहर शाही ने तसदीक़ फरमा दी कि यूनुस के क़ल्ब में सरकार गौहर शाही का जलवा शमाए इश्क़ रौशन किए हुए है। बहुत से लोग यूनुस को काफ़िर, मुल्हिद और गुस्ताख़ कहते हैं लेकिन हम समझते हैं कि सरकार गौहर शाही ने यूनुस अल्गौहर के मुहिब्बे गौहर शाही होने की तसदीक़ फरमा दी। लीजिए इस शायरी से लुत्फ़ अन्दोज़ हों और देखें कि हमारे दअ़वा में कितनी सच्चाई है।

अमजद गौहर (अ़रब इमारत)
मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल

मालिकुल मुल्क रियाज़ अहमद गौहरशाही

इस्म गौहर और इस्म रियाज़ की करिशमासाज़ी

इस काइनात की अफ़ज़लतरीन नेअ़मत इस्म "गौहर" और इस्म "रियाज़" है। यही अस्माए मुक़द्दस मुहब्बतोइश्क़ का अज़ीम सरमाया, ज़रीया और बारयाबीए मंज़िल हैं। इस्म गौहर और इस्म रियाज़ की तकरार से मुहब्बतोइश्क़ की लहरें उठती हैं। जो क़ल्बोरुह की ग़िज़ा और फ़िज़ा फ़राहम करती हैं। इन अस्माए मुक़द्दस के ज़िक्र से जो फ़िज़ा और समाँ बँधता है उसमें क़ल्बोरुह साँस लेते हैं। इस लिये ज़रुरी है कि इन मुक़द्दस अस्मा का कसरत से ज़िक्रोतकरार की जाये।

इस्म "गौहर" और इस्म "रियाज़" का ज़िक्र अफ़ज़ल तरीन इबादत है! हर क़िस्म की इबादत इन मुक़द्दस अस्मा के बग़ैर अधूरी और नामुमकिन है। मुहब्बान गौहरशाही पर लाज़िम है कि अज़कार अस्माए मुर्शिदी को रोज़आना ज़ौक़ोशौक़ के साथ करें। सुबह, शाम और रात को सोते वक़्त इन अस्मा के अज़कार को वज़ीफ़ा बनायें।

तसावीर गौहरशाही

अस्माए मुक़द्दस की कस्रतेज़िक्र के साथ-साथ तसावीर माशूक़ सैयदना गौहरशाही को बज़रिया मश्क़ अपनी नज़रों में जज़्ब करें। सरकार की तसावीर में सरकार के जुस्साहाय मुबारक मौजूद हैं। यह तसावीर मुर्शिद का काम करती हैं।

अश्ग़ाल-ए-इश्क़

१- तसावीर गौहरशाही को निगाहों में जज़्ब करें।
२- अस्माए मुक़द्दस का कसरत से ज़िक्र करें।

ज़िक्र...................... इख़तेताम ज़िक्र

या गौहर.................................... या गौहरशाही मरहबा
या रियाज़.................................... या गौहरशाही मरहबा
या गौहर या मेहदी.............................. या गौहरशाही मरहबा
ला इलाह इल्लल्लाह मेहदी ख़लीफ़तुल्लाह.......... या गौहरशाही मरहबा

ज़िक्र से फ़राग़त के बाद खड़े होकर पढ़ें:

"गौहर गौहर पुकारुँ मैं मौला........... मुझसे गौहर को राज़ी तू कर दे"

फ़िहरिस्त

1. गौहर गौहर पुकारूँ
2. मौत रक़्सॉ
3. सुन लो मेरी सदा
4. तुम ही से हरम
5. हर क़तराए ख़ूँ
6. जलवाए रियाज़
7. कृपा करो
8. रियाज़े मन
9. सफ़र रियाज़ुल जन्ना दा
10. गौहरशाही प्यारिया
11. माला जपो गोहर दी
12. सिजदों की सौग़ात
13. इन्न मअ़कुम
14. तेरी पोशीदगी
15. शरहए सदर
16. आज़माइश
17. यक़ीं मुहकम
18. शज्रए ग़ायेब
19. तूर
20. पर्दाए मस्लेहत.....लुत्फ़ए गौहर
21. गौहर से दिलबरी
22. पासे अश्क़
23. नामूसे गौहर
24. वस्वसए नफ़्स
25. शहसवारे मुहब्बत
26. बसाते ज़ीस्त
27. अज़्मते जानॉ
28. याद क्यों सताई हू
29. नज़र
30. जश्ने गौहर
31. प्यार की सौग़ात
32. गौहर की नज़रों में
33. रुहे गुमनाम
34. रम्ज़ शनासाई
35. जिन्से आदम
36. जुस्तजूए यार
37. बयाज़े रियाज़
38. इक़तिदाए रियाज़
39. फ़ल्सफ़ए इश्क़
40. तेरा भेद न पाये कोई
41. तनहा
42. नज्मे हुदा
43. ख़ामूश हैं लब
44. वफ़ा शिआ़री
45. मुख़बरे रियाज़
46. रियाज़े मस्तूर
47. सुख़न आलूद
48. मिस्ले गौहर है भला कोई
........निगारे ऑसू
49. चलिये यूनुस
50. इश्क़े रियाज़
51. मरहलाए इश्क़
52. ॲखियों का झरोंका.... रहबरी मेरी
53. गोशाए तनहाई
54. ख़ूए शाही
55. हाए अफ़सोस...... नसीहत
56. नख़्ले गौहर
57. रियाज़ी फ़ितरत
58. मुनाजात
59. गौहरदारी वफ़ादारी
60. ख़ुदादारी बेज़ारी
61. मजमूअ़ए ख़्याल
62. ज़ुल्फ़े गौहर
63. दिलबर याद आये हैं
64. तसल्सुले रियाज़
65. हब्ले गौहर
66. गोहर गौहर करे दुनिया
67. नशेमन
68. तेरे जमाल से
69. गौहरियत
70. तमसील..... सूए अ़दम
71. मुश्क़े दहन
72. विजय सत् गौहर
73. अंदाज़े जुनूँ...... रुख़े आइना
74. नज़रे गौहर
75. यूनुस
76. रियाज़ी
77. अर्क़े गौहर
78. रक़्से इश्क़
79. बुते ज़िंदॉ
80. अलिफ़ लाम रा
81. अफ़आ़ल निहॉ

गौहर गौहर पुकारूँ मैं मौला

गौहर गौहर .... गौहर .... या गौहर गौहर

गौहर गौहर पुकारुँ मैं मौला मुझसे गौहर को राज़ी तू कर दे
छीन ले ऐसी नेअ़मत खुदारा जो मुझे दूर गौहर से कर दे
तू ही कह दे क्या तेरा नहीं मैं क्या गौहर तुझ पे शैदा नहीं मैं
क्या आस पर तेरी ज़िंदा नहीं मैं क्या गौहर तेरा बन्दा नहीं मैं

गौहर गौहर .... गौहर .... या गौहर गौहर

नाम तेरा ही निकला ज़ुबॉ से ऐ गौहर जब भी गोया हुए हम
तूने चाहा तो तेरे हुए हम वास्ते तेरे पैदा हुए हम
है मुहब्बत इन ऑखों का बहना चुपक-चुपके हर एक ज़ुल्म सहना
चोट खाकर किसी से न कहना जॉ भी देकर वफादार रहना

गौहर गौहर .... गौहर .... या गौहर गौहर

ज़ुल्म ज़ालिम की ठहरी विरासत मेरे दिल की दुआ है मुहब्बत
हुब्बे गौहर मिले ऐसी क़िस्मत गौहर वालों के दिल की है दौलत
एहतेराज़े वफा है ये नफ़रत मुब्तिला-ए-जफ़ा है ये फ़ितरत
इश्क़े गौहर, गौहर की है सितवत क़ल्बे माशूक़ की न्यारी नुसरत

गौहर गौहर .... गौहर .... या गौहर गौहर

ऐसी शरीअ़त से क्या फ़ैज़ होगा जिसमें महके ना खुशबू-ए-गौहर
वह तरीक़त कहॉ है तरीक़त जिसमें शामिल नहीं रंगे गौहर
है हक़ीक़त वही बस हक़ीक़त जिसमें झलके तेरा अ़क्स गौहर
मरफ़त है तेरी मुस्कुराहट रूतबा क्या है बजुज़ नज़रे गौहर

गौहर गौहर .... गौहर .... या गौहर गौहर

यूनुस-ए-सोख़ता का है नारा दिल है तेरी मुहब्बत में हारा
तेरे अफ़कार से दिल हुआ न्यारा तेरी उल्फ़त का बहता हुआ धारा

गौहर गौहर .... गौहर .... या गौहर गौहर

मौत रक़्सॉं

या रियाज़े गौहर, या गौहर, या गौहर
लुत्फ़े ज़िकरे गौहर, या गौहर या गौहर
तेग़ गर्दन पे हो! जॉं हो दस्ते अजल!
दिल कहे या गौहर! लब कहे या गौहर!
मौत रक़्सॉं हो! और हो धमक या गौहर!
ख़ूॅं की हर बूॅंद बोले गौहर या गौहर!
इश्क़े गौहर है दिल में समाया हुआ!
रोके भी रुक सकेगा न ज़िकरे गौहर!
ऐ गौहर! जल्द हो जल्द हो यह समॉं!
जॉं हो नज़रे गौहर बा रज़ाए गौहर!
तूई सुल्ताने मन! तूई मेहमाने मन!
तूई क़िबलाए मन! तूई काबाए मन!
तूही वजहे फ़ज़ल, तूही जाने ग़ज़ल!
तू सरापा फ़ज़ल, तू सरापा ग़ज़ल!
जानो दिल तुझपे कुर्बान-कुर्बान है!
मेरे दिल का बस एक तू ही अरमान है!
मेरा ईमॉं भी तू , मेरा कुरऑं भी तू!
मेरा क़िबला भी तू , मेरा काबा भी तू!
जबसे देखा है तुझको तो बस तू ही तू!
दिल में तू, ऑंख में और जिगर में भी तू!
क्या कहूॅं दोस्तों! किस क़दर ख़ुश हूॅं मैं!
लिख रहा हूॅं ग़ज़ल सामने हैं गौहर!
मुसकुराना तेरा क्या ग़ज़ब है गौहर!
सुन रहा था मैं कल गुफ़तगूएमलक!
कह रहे थे है कोई क़रीबे फ़लक!
देखना चाहते थे मेरी एक झलक!
देखने आये मुझको मेरे घर तलक!
देखा मुझको तो था ज़िकरे गौहर में गुम!
तब तो कुदसी भी बोले गौहर या गौहर!
सामने हों गौहर और आये अजल!
दीद होती रहे दम निकलता रहे!
सिर पे दस्ते गौहर दिल में यादे गौहर!
तेरे क़दमों पे हो ख़ातमाए गौहर!
यूनुसे सोख़्ता क्यूॅं ना ख़ुशबख़्त हो!
जिसको मनजूर कर ले वो ज़ाते गौहर!

लंदन, इंगलेंड

सुन लो मेरी सदा

गौहर शाही पिया! सुन लो मेरी सदा.....होके तेरा रहूँ ना हूँ तुझसे जुदा
मेरा रस्ता है तू मेरी मंज़िल भी तू.....तुझसे निस्बत रहे मेरी, गौहर सदा
जान निकले मेरी तेरे दर पे गौहर!.....दम निकलता रहे, और हो ये निदा
गौहर शाही पिया! सुन लो मेरी सदा.....होके तेरा रहूँ ना हूँ तुझसे जुदा
हिर्सए उक़्बा नहीं! शौक़े हूरॉं नहीं.....साथ तेरा और तेरी नज़र हो अता
अर्ज़ कैसे करूँ ख़्वाहिशे दिल गौहर?.....तू ही ख़्वाहिश मेरी, तू मेरा मुद्दुआ
मैं तो खटका बहुत, मैं तो भटका बहुत!.....तू ही थामे रहा, तू है नूरूल हुदा
सारे जग के लिये तेरा दर है खुला!.....तुझको तकना लिक़ा, तुझमें खोना फ़िना
ना ही रूहानियत, ना कोई मरतबा!.....मुझको दरकार है बस गौहर की रज़ा
ना ही काबा की ज़ियारत रवा है मुझे.....ना मदीना को जाने की हाजत मुझे
तेरी नज़रों से पीकर हुआ मस्त मैं.....जाम तेरा मिले और तेरा मैकदा!

हज़रत रियाज़ अहमद गौहरशाही की ज़ाती शख़सियत के चंद पहलू!

हज़रते मेहदी एक मरतबा है तेरा.....यूँ तो फ़क़रो विलायत भी सेहरा तेरा
तू ख़ुदागर नहीं! तू जुदा भी नहीं!.....पर ख़ुदा कह के माना तो माना ही क्या?
तेरे सारे मरातब हैं बरहक़ गौहर.....तेरे क़दमों में सारी ख़ुदाई गौहर
पर मुझे ग़र्ज़ है इन मरातब से क्या?.....तुझपे शैदा हूँ मैं और तुझी पर फ़िदा!
रोज़े महशर में गर! पूछ बैठे ख़ुदा!.....क्या अक़ीदाओ मसलक है यूनुस तेरा?
मैं कहूँगा कि तू ही ख़ुदा है मगर!.....गौहर शाही से बढ़कर नहीं बाख़ुदा!

तुम्हीं से हरम है क़ायेम

तुम्हीं से हरम है क़ायेम तुम्हीं से बुत ख़ाने
ये और बात है दुनिया ना तुम को पहचाने
किसी के मन में समाये हो देवता की तरह
और दिलो जान से कोई तुम्हें ख़ुदा जाने
गौहर परस्तों का कोई मज़हब नहीं होता
जिसको मिल जायें गौहर वो मज़हब को क्या जानें
तुमने चाहा कि रहो ख़ुद से भी पोशीदा मगर
चॉदो सूरज ने सुनाये तुम्हारे अफ़साने
शेख़े काबा ने तो चाहा कि ना हो ज़िक्र तेरा
है हज्र अस्वद में क्यों सूरत तेरी ख़ुदा जाने
इन्हीं में गुम है नबूवत, अल्वहीयत ब ख़ुदा
अ़बस है गर ये कहें हम हैं इनको पहचाने
समझिये क्या इन्हें, क्या जानियेगा क्या हैं गौहर
गौहर नुमा है ख़ुदा हम तो बस हैं यह जाने
सारे आ़लम को दिया दर्से आ़शिक़ी तुमने
क्यों ना चाहे तुम्हें दुनिया? ना तुमको क्यों माने
इश्क़ फ़ितरत है तेरी, इश्क़ ज़ुबॉ, इश्क़ अदा
इश्क़ तालीम तेरी! इश्क़ तेरे पैमाने
बे नियाज़ी पे तुम्हें नाज़ हमें फ़ख़्र भी है
पर मेरी जान कहॉ जायें तेरे दीवाने
गौहर के रंग में रंग जाये जब कोई यूनुस
गौहर की पूजा करे वो ख़ुदा को क्या जाने

हर क़तरा–ए–ख़ूॅ

हर क़तरा–ए–ख़ूॅ तेरी मुहब्बत में बहेगा
ये सर तो फ़क़त तेरी इबादत में झुकेगा
जो बन्दा–ए–गौहर है वही बन्दा–ए–हक़ है
यह राज़ सरे आम क़यामत में खुलेगा
जिस शख़्स को हासिल है तेरी ज़ात से उल्फ़त
वह शख़्स ही बस तेरी मअ़इयत में रहेगा
वारे हैं जिसने दोनों जहाँ तेरी वफ़ा में
वह खुश नसीब तेरी निगाहों में रहीगा
कुछ दीन के शैदाई तो कुछ चन्दा के परस्तार
ख़लिस है वह जो तेरी मुहब्बत में मरेगा
तूफ़ाने यकायक से बिखर जायेगा हर शख़्स
बाक़ी जो बचा तेरी इनायत से बचेगा
गौहर शाही से जो पेवस्ता हुवा है यूनुस
रंगे गौहर उसे हर रंगे हक़ायेक़ में रचेगा

(मानचेस्टर.....इंगलैण्ड)

जल्वा-ए-रियाज़

जल्वा-ए-रियाज़ ने जब अन्जुमन आराई की
तो देखना होगी शहंशाही गौहर शाही की
आज जो मुल्ज़िमो मुजरिम उन्हें ठहराते हैं
कल वही लोग पनाह लेंगे गौहर शाही की
हज्र अस्वद से है गर बैर तो सूरज देखो
हर जगह आ गई तस्वीर गौहर शाही की
वह अज़ल से भी क़दीम उनको कोई क्या जाने
वह हक़ीक़त में हक़ीक़त हैं किबरियाई की
लश्करे इश्क़ में तलवार है और ख़ून भी है
बस इजाज़त हो ज़रा मेरे गौहर शाही की
जब तेरे नाम पे मरना है तो उलझन कैसी?
तेरी उलफ़त ही है पूँजी तेरे शैदाई की
यूँ तो मेहदी हैं वो, अवतार और मसीहा भी
पर बड़ी बात है गौहर से शनासाई की
खलबली क्यों है ज़ाकरीं में खौफ़ किसका है
जबकि महशर में हकूमत है गौहर शाही की
कैसे समझाऊँ इन्हें अज़मते गौहर यूनुस?
बात हक़ की ही नहीं बात है हक़ नुमाई की

कृपा करो महाराज रा गौहर

कृपा करो महाराज रा गौहर, कृपा करो सरकार
दर्शन दे दो मुझ भगती को चरण लगूँ सरकार
तुमरे दम से रौनक़ जग में, तुम ही से संसार
तुम ही सब के राम हो गौहर, तुम हो पालनहार!
मन मंदिर में तुमरी मूरत, तुम भगवन सरकार
तन भी तुमरा, मन भी तुमरा, तुमरा है घर बार
अरज सुनो महाराज रा गौहर, अरज सुनो एक बार
दो नैना को तुमरे दर्शन हरदम हैं दरकार!
ऐसी राह दिखाओ मुझको तुमसे मिलूँ हर बार
तुम पर वारी तुमरा पुजारी, तुम मोरे राज कुमार
जनम-जनम से तुमरा हूँ गौहर, तुम केवल सरकार
भरम तुम्ही हो, धरम तुम्ही हो तुम कलकी अवतार!
मोरे नैनों सारी रैनों तरसे दीद को तोरे
पूर्णिमा के दर्शन दे दो, ओ! चंदन सरकार
यूनुस तरसे प्रीत को तोरी, रंग दो तन और मन
मन भी तुम हो धन भी तुम हो तुम प्रीतम का प्यार
कृपा करो महाराज रा गौहर,.......................

रियाज़-ए-मन या रियाज़ जानाँ

रियाज़-ए-मन या रियाज़ जानाँ, दिल में आना रियाज़ का
गुनचा-ए-दिल का खिलाना, मुसकुराना रियाज़ का
तू अलाओ इश्क़ का और मैं हूँ परवाना तेरा
जलना फ़ितरत में है मेरी और जलाना रियाज़ का
मैं कहूँ तो मैं ही जानूँ , कौन मुझमें बोले है?
बोलता मैं ही हूँ लेकिन, है फ़रमाना रियाज़ का
क्यों टटोलूँ क़ल्ब को जब कि वह क़ालिब में भी हैं
मेरा दिल तेरा ठिकाना और समाना रियाज़ का
रियाज़ देखे रियाज़ जाने, रियाज़ की बतीयाँ करूँ
रियाज़ की नज़दीकियों में गुम दिवाना रियाज़ का
रियाज़ हाँ एक राज़ है लेकिन खुला मुझ पर कि यूँ
जिस्म के गुंचे से दिल में है उभरना रियाज़ का
आ़लमे नासूत में जो भी ठिकाने हैं तेरे
तेरे मेरे दिल हैं जिन में है ठिकाना रियाज़ का
रियाज़ क़ालिब में बसे तो रियाज़ ही जाने ये हक़
दुनिया वालों को ना यूनुस, तुम बताना रियाज़ का

सफ़र रियाज़ुल जन्ना दा

(फ़रमान-ए-गौहर शाही)

मैं ते भुल के वी नई भुलियाँ, रूख़ तेरा इधर होवे

ऑखीं सोहने नूँ वाये नी, जे तेरा गुज़र होवे
मैं ते मर के वी नई मरदा.....जे तेरी नज़र होवे
दम-दम नाल ज़िकर करॉं, मैं तेरीयॉं जुलफ़ॉं दा
तेरे नाम तूँ वार दियॉं, जिनी मेरी उमर होवे
जदूँ गौहर कहॉवॉं.....खिच पैंदी ए सीने विच
बाझों गौहर ढोलन दे, कीवीं उमर बसर होवे
कीवीं हिजर दी सूली ते, मैनूँ चाड़ दित्ता गौहर
भन सुट दिल मेरे नूँ, जे चाह विच कसर होवे
मैं कमली ऑं खोजी ऑं, कीवीं चाह तेरी मंगॉं
तूँ रियाज़ी करम कर छड, भावीं मंग मकर होवे
तूसी नेड़े ई वसदे हो, ऐहो दिल मेरा कैंदा ए
एक फेरा ला गौहर, तॉं दिल नूँ सबर होवे
तुसी ईथे ई लुक्के ओ, मैंनूँ दिल मेरा केंदा ए
सोहना मुखड़ा वेखा दिलबर, हजवॉं दा सफ़र होवे
तेरा मुखड़ा तकदा रवॉं, ऐ मैं वी चॉना विच
कदी रियाजुल जन्ना दा, मेरा वी सफ़र होवे
तैनूँ तकना हयाती ए , मेरे दिल दी ऐ गौहर
तेरा मुखड़ा हर वेले, मेरे पेशे नज़र होवे
तुसी शह रग तूँ नेड़े हो, की दसीये हाले दिल
ऐहोई मंगना दुआवॉं में, मेरा दिल तेरा घर होवे
जदूँ नाम लिवॉं तेड़ा, इक हूक पई उठदी ए
हर वेला मेरे गौहर, तेरे नाल बसर होवे
मैथूँ राज़ी रवे गौहर, निकी अरज़ मैं कीती ए
क़दमॉं विच गौहर दे, कदी मेरा वी सर होवे
यूनुस दी दुआवॉं दा, कोई मोल नईं लोकों
जदूँ गौहर कहूवॉं दिल तूँ , हर पासे गौहर होवे

(25 जून 2003.....लंदन)

गौहर शाही प्यारिया

सुन गौहर शाही प्यारिया, जिन्द-जान तेरे तूँ वारिया
तूँ अज़लों तूँ तक़दीर मेरी, एथे आके तैनूँ पा लिया
तेरी अखियाँ इश्क़ सिखांदियाँ ने, मस्ती दा जाम पिलांदियाँ ने
तक अँख तेरी आशिक़ होया, नाल रूह नूँ वी चमका लिया
अँखियाँ दे बूए बै के मैं, पीदा रवाँ जाम-ए-गौहर
जे अँखियाँ नीर बहांदियाँ ने, नाल नीरों नूँ वी रूला लिया
बुलियाँ चूँ मुश्क दाख़िल कीता, हस्ती नूँ मुश्क बना दित्ता
मैनूँ लब पिला के गौहर ने, इश्क़े दा तिफ़ूल जमा दिया
मैं गौहर गौहर करदीयाँ, गौहर दी बूटी लावाँगा
गौहर दी करम नवाज़ी ए, मैनूँ अपने पीछे ला लिया
मैनूँ बुटियाँ दित्तियाँ गौहर ने, हर पासे वँडदा जावाँगा
जेनूँ ज़ाते गौहर ने चाह लिया, ओथे इस्म ने डेरा ला लिया
ईमान धरोई पै गया, दिल गौहर शाही लै गया
ईमान नूँ मगरूँ लाके मैं, गौहर दा रंग चढ़ा लिया
चन, सूरज, हज्रे अस्वद विच, रोशन हुई तस्वीर तेरी
मेरे दिल नूँ वी चमका दियो, जे वीं पथरों नूँ चमका दिया
जेड़े ग़रज़ी सन ओ दौड़ गये, अपने रब तूँ मुंह मोड़ गये
लड़ ला के भुल ना जा वीं तूँ , मैं दिल तेरे तूँ हारिया
आदम एक धोका मौक़ा ए, मुक जाना ए तक़दीर एदी
मैं शोला इश्क़ दी भट्टी दा, एथे आके भेस वटा लिया
नाल सोहने दिलबर गौहर दे, लड़ लाके यूनुस सो गया
हुन सुतियाँ फ़ेर मैं जागाँ गा, जदो गौहर ने बुला लिया

(26 जून 2003.....लंदन)

माला जप्पो गौहर दी

नच, नच के रोला पावॉंगा.....गौहर नाल अख लड़ावॉंगा
दे बॉंग गौहर दे नावॉं दी.....दुनिया नूँ गीत सुनावॉंगा
जो रल मिलया वो पार लगा.....जो भुलिया मैं भुल जावॉंगा
जिस प्रीत लगाई नाल गौहर.....मैं उस नाल हाथ मिलावॉंगा
उस दिलबर दी तारीफ़ केवीं.....कर सकदा ए कोई वी बशर
गौहर दा नॉं लै-लै के मैं.....नाव अपनी पार लगावॉंगा
हर वेला मेला गौहर दा.....हर हस्ती मस्ती गौहर दी
तुसी माला जप्पो गौहर दी.....मैं नाल तुसॉं रल जावॉंगा
चन वेख के याद सतांदी ए.....तैनूँ वेख के ईद मनावॉंगा
रब रियाज़ प्रीत नूँ तोड़ दे नई.....संग लाके बेबस छोड़ दे नई
जो हर मौला दा मौला ए.....मैं उस नाल प्रीत लगावॉंगा
एक खेड बनाई दुनिया ए.....उस खेड दी खेड में खेडॉंगा
उस खेड चूँ लभिया यार मैंनूँ.....हर बाज़ी खेडी जावॉंगा
रूह साडी गौहर तूँ वख नई.....बिन गौहर दिल विच कख नई
अख तूँ दिल द्वारे आके मैं.....गौहर मुख विच लुक जावॉंगा
यूनुस तू साडा बन्दा ए.....रख सॉंभ के अपने सजदियॉं नूँ
तेरे सजदियॉं दा एक दिन सुन रख.....इश्क़े दा हार बनावॉंगा

सजदों की सौग़ात

मेरे नग़मात बस तेरे लिये हैं
मेरे दिन-रात बस तेरे लिये हैं
तुझी को ढूँडे हैं तरसी निगाहें
यह एहसासात बस तेरे लिये हैं
मैं तनहा हूँ ज़मीं पे तू कहाँ है?
मेरे लमहात बस तेरे लिये हैं
मेरी मुसकान में रंगीनियाँ हैं
मेरे जज़बात बस तेरे लिये हैं
सुबह से शाम और फिर रात में तू
मेरे अवक़ात बस तेरे लिये हैं
जिस्म फ़र्शी तो दिल मेरा है अ़र्शी
यह मुआ़मिलात बस तेरे लिये हैं
तू दिल से उभरे तो बनती ग़ज़ल है
यह ग़ज़लियात बस तेरे लिये हैं
ख़ुदा से बेख़बर हूँ और मुहम्मद अजनबी हैं
यह तसबीहात बस तेरे लिये हैं
तअ़ल्लुक़ क्या मेरे सिजदों से रब को
मेरे सिजदों की ये सौग़ात बस तेरे लिये हैं
सुना है अ़र्शियों से रमज़े गौहर आ़म होगी
अब कुछ भी हो मेरे हालात बस तेरे लिये हैं
दिया दर्से मुहब्बत तुमने यूँ तो दो जहाँ को
कुछ फ़रमूदात बस मेरे लिये हैं
ख़ुदा की बिरादरी का राज़ खेला
यह इक़दामात बस तेरे लिये हैं

मेरा तुझसे तअ़ल्लुक़ अब भी क्यों है?
यह इलज़ामात बस मेरे लिये हैं
मुनाफ़िक़ रन्ज देकर दिल दुखाये
अज़ल से यह ख़ुराफ़ात बस एक मेरे लिये हैं
गौहर ख़ातिर तेरी, मुझपर ख़ुदा की लअ़नतें हों
अज़ल से यह नवाज़िशात बस एक मेरे लिये हैं
गौहर आँखों से ओझल है मगर दिखता है हरजा
यह नज़रों के तिलिस्मात बस एक मेरे लिये हैं
ख़ुदा वाले, ख़ुदा ही से पनाह लें
गौहर का दर्द और ग़म की मदारात बस एक मेरे लिये हैं
गौहर के हुस्न से रोशन हैं यूँ तो सैकड़ों दिल
यह ग़ज़लों की करामात बस एक मेरे लिये हैं
गौहर के सामने गर की वफ़ा तो क्या वफ़ा की
गौहर की खोज की सारी मुहिम्मात बता किसके लिये हैं
ख़ुदा से छेड़ ली है जंग गौहर ने
कि हो मालूम गौहर से तअ़ल्लुक़ात बता किसके लिये हैं
करूँ गुस्ताख़ से क्यों कर बहस मैं
यह सब हुज्जात बस तेरे लिये हैं
ग़फ़ूर अ़लवी कहें तरज़े तख़ातुब सख़्त क्यों है
यह लेहजे की रवायात बस एक तेरे लिये हैं
सब ही हैं मुज़तरिब यूनुस कि गौहर को हुआ क्या
रियाज़े हस्ती की सारी रियाज़ात बस एक तेरे लिये हैं

इन्न मअ़कुम

इन्न मअ़कुम की सदा आती है.....कुछ तसल्ली सी हुई जाती है
उस तबस्सुम की बात क्या कीजिये.....रूह को ज़िंदगी मिल जाती है
साक़िये रूह, गौहर की आखें हैं.....रूह मदहोश हुई जाती है
सेहरे गौहर में गिरफ़तार हुआ.....अब कहाँ अक़्ल मुझे भाती है
काश तुम उनसे प्यार कर लेते.....उनकी आखों में कुल सबाती है
प्यार हो जाये तो मुश्किल क्या है.....प्यार की रम्ज़ गुर सिखाती है
प्यार दीवानगी सिखाता है.....प्यार से ख़ूए यार आती है
नूर रौशन चिराग़ है लेकिन.....प्यार से बूए यार आती है
उन की आखें हैं प्यार का क़िब्ला.....क़िब्ला रूख़ क़ल्बो नज़र जाती है
यह जहाँ गौहरी अज़ान बना.....नारा-ए-रियाज़ से तकबीर कही जाती है
प्यार गौहर है, गौहरी रंग में.....हर हिना प्यार की रंग लाती है
अब मेरा दिल यहाँ नहीं लगता.....इश्क़े गौहर की लौ सताती है
हिम्मत आमेज़ हैं लमहाते अलम.....हर ख़ुशी फीकी पड़ती जाती है
किस जहाँ से यह नामे आते हैं.....नामाबर की ज़ुबाँ बताती है
इश्क़ अपना ख़ुदी में पिनहाँ है.....कैफ़ियत इश्क़ की जताती है
मुंतज़िर किस ख़ुशी का रहता हूँ.....आँख क्यों इस क़दर रूलाती है
मैंने समझा था इश्क़ राज़ रहे.....इश्क़ की मुश्क फैली जाती है
ख़िल्वते बज़्मे ज़ुल्फ़े यार सबा.....सारे आलम पे वो लहराती है
सीनाए अजल पे करता हूँ दास्तान रक़म.....इश्क़ से मौत सहमी जाती है
फ़ितरते इश्क़ अव्वलीं हुआ जब रिश्ताए रूह.....फिर कहाँ दूसरी निस्बत असर दिखाती है
मैं रियाज़ी हूँ मेरी साँस है सबा-ए-रियाज़.....अब सबाए जहाँ से रूह कसमसाती है
दीन-ए-यूनुस गौहर की हस्ती है.....बंदगी की अदा बताती है

तेरी पोशीदगी

ना मैं तुझसे जुदा, ना तू मुझसे जुदा
मैं हूँ तुझपे फ़िदा, तू मेरा है ख़ुदा
मुझको देखे कोई तो मेरी ही सुने
तुझको जाने कोई तो तुझे दे सदा
चश्म बेनूर है उसपे दिल है सियाह
जिसको देखे नज़र वो नज़ारे जुदा
रूह रब की हक़ीक़त से मामूर है
नफ़्स की ग़ैरियत में छुपा है ख़ुदा
अपनी जल्वत में अपनी ख़ुदी को परख
जल्वा-ए-जानाँ किसने कहा है जुदा
अपनी हस्ती को क्या ढूँड पाऊँगा मैं
तुझमें खोकर भला मुझमें क्या है बचा
आ भी जाओ गौहर सूनी है ये फ़िज़ा
ज़िंदगी बिन तेरे हो ना जाये क़ज़ा
कान तरसे हैं तेरी ही आवाज़ को
आहटों पे लगे तेरी आये सदा
क्या सज़ा है कोई तेरी पोशीदगी
या है इल्ज़ाम ए इश्क़ो सज़ा ए वफ़ा
आज संदेश दे टूटे दिल को गौहर
मुंतज़िर हैं सभी तेरी आये सबा
अपने जलवों की शिद्दत बढ़ा दीजिये
ये ही मतलूब है और यही है निदा
अब शबो रोज़ यूनुस की है इल्तिजा
वस्ल ए दायेम की गूँजे है दिल से सदा

(18 मई 2003.....लंदन)

शरह-ए-सदर

नाम ए गौहर से बढ़ कर नहीं कुछ.....नाम ए गौहर है कुंजी क़दर की
पा गया राज़ ए मख़फ़ी वही शख़्स.....जिसने गौहर से शरह ए सदर की
मंज़िलों का निशॉं है वही दिल.....ज़ीस्त जिसने गौहर माअ़ बसर की
भटका फिरता है दर-दर पे वो ही.....जिसने ज़िकरे गौहर में कसर की
उंगलियॉं दॉंत में देते फिरते.....पूछे हैं बात है ये किधर की
जिस जगह है गौहर का ठिकाना.....बात करता हूँ मैं भी उधर की
तुख़्म ए इश्क़ की है ख़ैरात वॉं बस.....सदक़ा ए जान जिसने नज़र की
इश्क़ दुनिया में ही हश्र कर दे.....फ़िक्र क्यों मैं करूँ फिर हशर की
ग़ुस्ला ओ असनान पाकी नहीं है.....बात करता हूँ मैं चश्म ए तर की
पाक फ़ितरत अता हो गौहर से.....है विरासत फ़क़त तिफ़्लेनर की
यार दुनिया में बसरे खुदा ह.....बुल्हे शाह की भी यारी दहर की
मैं बताता हूँ इसरारे मख़फ़ी.....मेरी गोयाई है उस ख़बर की
नामाबर जामाए नामाबर है.....रीत डाली है यह नामाबर की
नामाबर जानता है नज़ाकत.....ऐसे दीवाने आशुफ़तासर की
ऑंख रोये तो ऑंसू बचा लो.....दीद मॉंगो तो तलक़ीं सबर की
दर्द से आहें निकलीं तो बोले.....दर्द की कैसी तुमने क़दर की
सारे उश्शाक़ मुर्शिद में गुम हैं.....हर शजर को पड़ी है समर की
ख़ुसरू अपने पिया की लगन में.....बात यूनुस करे है गौहर की

8 जुलाई 2003........लंदन, इंगलैंड

आज़माइश

आज़माइश का यही वक़्त है आगाह रहो
जॉं लुटाने का यही वक़्त है आगाह रहो
कौन कहता है मसलेहत से काम लेना है?
इज़हारे हक़ का यही वक़्त है आगाह रहो
बातिल की कुव्वतें हुईं सब बरसरे पैकार
साथ देने का यही वक़्त है आगाह रहो
ज़हूरे मेहदी हो गया बसूरते गौहर
सदाए हक़ का यही वक़्त है आगाह रहो
अब तो हर हाल में गौहर का साथ देना हे
वफ़ाए हक़ का यही वक़्त है आगाह रहो
गौहर शाही के लिये जिस्मो जॉं लुटाना है
सिर कटाने का यही वक़्त है आगाह रहो
मासिवा हुब्बे गौहर सारे अक़ायेद बरतरफ़
साथे गौर का यही वक़्त है आगाह रहो
दिल के हर गोशे में गौहर का नक़्श है यूनुस
रंग जमाने का यही वक़्त है आगाह रहो

यकीं मोहकम रहे गौहर पे

यकीं मोहकम रहे गौहर पे तो हर दौर अच्छा है
जिसे गौहर से उल्फत हो, वह गुनहगार सच्चा है
नफ्स बेदार है और रूह महवे इस्तेराहत है
ये जहाँ ख़्वाब है इस ख़्वाब का हर रंग कच्चा है
गौहर का नक़्शेपा, सिजदागाह है अहले गौहर है
गौहरी नक़्श है क़िबला तो हर इक लम्हा सिजदा है
मोहब्बत क़ल्ब से, और रूह से आशिक़ बनूं तेरा
बन्दगी नफ्स से और दिल हरीमे रियाज़ हक़्क़ा है
किसे हाजत रहे सिजदों की जब मस्जूद अन्दर है
सिज्दाए दिल हज़ूरी में रहे तो सबसे अच्छा है
वफ़ादारी, मोहब्बत, इश्क़ सब उनकी अतायें हैं
न हो हासिल अगर कुछ भी तो गौहर नाम सच्चा है
इबादत पारसाई जग हसाई बन गई यूनुस
बख़ील आबिद से सहबारी भला गौहर का कुत्ता है

शजरे ग़ायेब

ज़िकरे गौहर अताए गौहर है
ज़िकरे गौहर पे आँख भर आये
ज़िकरे गौहर वजूदे इस्मी है
शोलए इस्म से शरर आये
क्यों ख़फ़ा हो? वफ़ाए गौहर पे
हुब्बे गौहर में क्यों कसर आये?
आशिक़ी, इश्क़ की अमानत है
इश्क़ में चाहे तन से सर जाये
अज़ल से पेश्तर है इश्क़ मेरा
कुन फ़यकूँ से क्यों बिखर जाये
आशिक़ी मशग़लए गौहर है
मशग़ले गौहर में जाँ सँवर जाये
गौहर शाही लिल्लाही दीन क्यों है?
फातहे इश्क़ से नुसर आये
इश्क़ क्यों आये जब न माशूक़ हो
मअ़ जब इश्क़ है तो फिर आये
इश्क़ को देखना ही बीनाई
दीदो बीना इश्क पर आये
क्या जहाने ख़राब की वक़अ़त?
इश्क़ क्यों इस जहाँ में फिर आये?
अपनी बूटी यहाँ नहीं यूनुस
शजरे ग़ायेब में क्यों समर आये

तूर

अपना पराया कौन है मालूम हो गया
गौहर का साया कौन है मालूम हो गया
रूहानियत के नूर से पहुंचा तो बहरे नूर तक
गौहर का रस्ता और है मालूम हो गया
जिस दिल में नूर है वो मिस्ले काबा तो हुआ
गौहर का तूर और है मालूम हो गया
दीदारे रियाज़ मागे है मूसा के रूप में
क्यों लन्तरानी कह दिया मालूम हो गया
आँखों से दूर क्या हुआ दिल में समा गया
ग़ैबत करम की भीक है मालूम हो गया
जिस आँख से ओझल हुआ वो हो गई बेनूर
दिल में समाया रियाज़ तो मालूम हो गया
ख़्वाजा ख़ुदा का रूप हैं, दाता भी हैं मगर
हम भी किसी का रूप हैं मालूम हो गया
चन्दा में, सितारों में, मेरे दिल में हैं गौहर
कहता है कौन रियाज़ अब मअ़दूम हो गया
गौहर तुम्हारे नाम के शैदा खतम हुए
गौहर पराया हो गया मालूम हो गया
ऐ मालिके जहाँ क्यों ठिकाना बदल हुए
क़सरे रियाज़ है कहाँ मालूम हो गया
अब नाज़ उठायें तेरे अन्दाज़ क्या होंगे
अब नाज़े रियाज़ है कहाँ मालूम हो गया
जो सायाए गौहर से हुआ दूर तो सुन लो
वह रियाज़ के जलवों से भी महरूम हो गया

जिस क़ल्ब में गूंजे है तेरे नाम की तकबीर
उस क़ल्ब की परवाज़ का मालूम हो गया
क्यों अश्क बहाऊं मैं तेरे धोके पे गौहर
तू मक्र के परदे में है मालूम हो गया
यूं तो ख़ुदा भी मकर का बेताज शहंशाह
तू मिस्ले लामिस्ल है ये मालूम हो गया
क्योंकर अ़दम की तल्ख़ हवायें तुझे छू लें
तू हर अ़दम की असल है मालूम हो गया
तू है तो अ़दम है, तेरा होना ही अ़दम है
तू छाया तो अब हर अ़दम मअ़दूम हो गया
तू आलमे असबाब में आया किसी में यूं
तू जाने हस्ती और वो ख़ुद मअ़दूम हो गया
तू मज़हरे रियाज़ है तुझको फना नहीं
जो तुझसे हुआ दूर वो महरूम हो गया
ये लम्स तेरा है या मेरा है नहीं ख़बर
अब मैं कहाँ रहा हूं ये मालूम हो गया
क्यों देख पाऊं तुझको कि आंखें हुई मन्ज़र
आँखों का नूर तूर है मालूम हो गया
यूनुस ग़ज़ल का अन्तरा यूनुस पे ख़तम कर
यूनुस पै कहाँ खोगया ? मअ़दूम हो गया

परदा ए मसलेहत

परदा ए मसलेहत से जज़्बात हुए नाकारा
मोज्ज़ाए इश्क़ के तिलिस्मात हुए नाकारा
छा गये अहले इलम, अहले अक़्ल, अहले ख़िर्द
मिट गई सोज़ो जलन, इश्क़ हुआ आवारा
अब जुनूं खो सा गया, वारफ्तगी भी सर्द हुई
मस्लेहत आम हुई, इश्क़ हुआ नाकारा
इश्क़ ही इश्क़ पर कुर्बान होके शाद हुआ
इश्क़ की भेंट चढ़े, क़ल्ब हुआ सहपारा
यूनुस दास्ताने अलम अब किसी से क्या कहिये!
इश्क़ शहज़ोर भी लगता है आज बेचारा!

१५ अक्तूबर १६६६, दौराने परवाज़ लंदन ता अमेरिका

लुत्फे गौहर

दिले बेज़ार को तलब ही नहीं
इस जहाने ख़राब की रौनक़
हाँ मगर लुत्फे यार की ख़ातिर
इशरते क़त्ल की ख़्वाहिश है हक़
क्या उन्हें भी ख़बर है यूनुस कि
हिज्र के ख़ौफ़ से दिल है फ़क़

अक्तूबर १६६६ वरजीनिया, अमेरिका

गौहर शाही से दिलबरी की है!

अपनी क़िस्मत से यावरी की है, जबसे गौहर से दिलबरी की है
जानो दिल दोनों निछावर करके, हमने गौहर से दोस्ती की है
गौहर शाही से करके अहदे वफा, सारे आलम से दुश्मनी ली है
सर हथेली पे रख लिया हमने, क्यों कि गौहर से आशिक़ी की है
सारी दुनिया के बादशाह हैं हम, क्यों कि गौहर की चाकरी की है
तेरे जलवों की ज़ौफ़िशानी ने, सारे आलम में रोशनी की है
क्या कहूँ अज़्ल से तुम्हारा हूं, अब नहीं तबसे दोस्ती की है
खेमाज़न दिल में हो गये गौहर, फिर भी हर लहज़ा बेकली सी है
यूं तो रहते हैं वो मेरे दिल में, फिर भी कुर्बत की तिश्नगी सी है
ऐसे रहते हैं वो मेरे दिल में, जैसे चिलमन में इक शबीह सी है
मौत आये रहे गौहर में मुझे, इक तमन्नाए दिल बनी सी है
क्यों झुकाऊं मैं सर को बहरे खुदा, अज़ल से तेरी बंदगी की है
जिस सिमत जाइयेगा, हैं गौहर, हर शबीह सूरते गौहर सयी है
सैर हासिल नहीं है दीद तेरी, सब खुदाओं की बस नफ़ी की है
जामो साग़र की अब क्या पूछते हो? उनकी आँखों की हमने मय पी है
जब से देखा है उनको यूनुस ने, तबसे आँखों में इक नमी सी है

२७ दिसंबर १९९९ फ्रैंकफर्ट, जर्मनी

पासे अश्क

है बक़ा ज़ाते गौहर में यूं फ़ना होने का नाम
जैसे ज़ुल्मत छटके हर सू रौशनी होने का नाम
इक ख़ज़ीनाए ख़ज़न है तेरी हस्ती ऐ गौहर!
और लक़ब मेहदी है तेरे आम हो जाने का नाम
चाँद, सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर!
है सबूते हक़ तेरा इस दिल में आ जाने का नाम
कौन जीने की तमन्नायें करे बाद अज़ गौहर!
तुझपे मरना है गौहर इक तरह जी जाने का नाम
सिज्दाए इश्क़ो मुहब्बत क्या करूं मैं ऐ गौहर
तुझमें खो जाना है हर एक सिज्दा हो जाने का नाम
मौत क्या मारेगी मुझको! मौत क्योंकर मौत हो!
इक अदाए दिलबराँ है जान से जाने का नाम
तू परे है उस खुदा से जिसको पूजे हर बशर
तुझको पा जाना है सिर्रे ग़ैब को पाने का नाम
हालते ईमानो हुब्बो इश्क़ में क्या फर्क है?
फर्क है बस सिर्रे गौहर का सिरा पाने का नाम!
क्या ख़बर यूनुस उन्हें किस दरजा पासे अश्क है?
आँख का है मूंदना, आँसू के बह जाने का नाम

८ जनवरा २००० मेरी लैन्ड, अमेरिका

नामूसे गौहर शाही

इस दौरे इब्तिला में वफा कौन करेगा
गौहर के लिये जामे फ़ना कौन पियेगा
इन्साफ़ है नापैद और हाकिम हुए ज़ालिम
इस दौर में ललकारे गौहर कौन बनेगा
गौहर की शबीहात पे हंसता है ज़माना
अब तेरे शआ़एर की सना कौन करेगा
नामूसे गौहर शाही को लाहक़ हुआ खतरा
गौहर की आबरू का दिफ़ा कौन करेगा
मनज़ूर किसे होगा तेरे नाम पे मरना
अब हक़ की सदाक़त की सदा कौन बनेगा
बेहिस हुए ज़ाकिर बअन्दाज़े बूजहल
किरदार नुमा शेरे ख़ुदा कौन बनेगा
उल्झन की कैफियत है अब अरबाबे वफा में
अब जज़्बाए शहादत की दुआ कौन करेगा
हक़जोईयो गोयाई भी शायद हुई मफ़क़ूद
इस दौर में गौहर की ज़ुबाँ कौन बनेगा
गौहर हैं तमाशाई बअफ़आ़ल करम ख़ुद
हैं मुन्तज़िर कि जान फ़िदा कौन करेगा
कुरबानियो ईसार का वक़्त आन ही पहुंचा
अब देखिये कि जंगे बक़ा कौन लड़ेगा
अहले दिल छुप गये और आशिक़ीं भी सर्द पड़े
अब तेरी शुजाअ़त की अदा कौन बनेगा
यूनुस जिन्हें हासिल है अज़ल से ही रफ़ाक़त
उन जैसा वफ़दार भला कौन बनेगा

२ मई २०००, कराची

वसवसाए नफ्स

कसमे वादे मत दोहराओ, करो बहाना जान छुड़ाओ
ज़िकरो फिकर सब ठीक था लेकिन, दरसे शहादत मत समझााओ
मैं क्यों अपना तन मन वारूँ? मुझपर हक़ तुम ना जतलाओ
मेरे बीवी और बच्चे हैं, मुझसे सहल कोई काम करवाओ
मुझसे कोई पैसा ना मांगो! मुझसे तक़रीरें करवाओ
हक़ की बाबत कुछ ना पूछो, मुझसे तुम फितने उठवाओ
हक़ मानना ही काफ़ी है, हक़ पे मरना मत समझाओ
मुझसे कोई तुम फन्ड ना मांगो, मुझको तबररूक रोज़ खिलाओ
मुझसे तवक़्क़ो कुछ ना रक्खो, मेरे बिगड़े काम बनाओ
रात का पहरा मत दिलवाओ, मुझको दिन का काम बताओ
यूनुस भाई ज़िन्दीक़ हुए हैं उनका बन्दोबस्त करवाओ
गौहर उनकी बात ना मानो, उनको सूली पर लटकाओ
ये लोगों को क्यों गाली दें? तुम चाहो गाली सह जाओ
फेर लो इनसे नज़रे इनायत, इनको मुरदा ही ठहराओ
मेरी भी कुछ मजबूरी है, मुझको गौहर भूल ही जाओ
कौन मरे अब हक़ की ख़ातिर, यूनु अब तुम ही बतलाओ

८ मई २०००, जमशेद रोड कराची

शहसवारे मुहब्बत

मुहब्बत के दावे वफा हो गये?
वह क़र्ज़े मोहब्बत अदा हो गये?
बड़ा नाज़ था जिनको क़ुर्बानियों पर
वह सब सूरमा क्या हवा हो गये?
चलाई जो इब्लीस ने भेड़ चाल
शहसवारे मोहब्बत फना हो गये!
नहीं काम जिनको बजुज़ ख़ुदनुमाई
वही दौरे हाज़िर में वाँ हो गये
गौहर के मक़ासिद से क्या वास्ता?
अड़ी और तग़ाफुल में जाँ खो गये
जो होते थे नामे गौहर पे फिदा
वफादार वो सब कहाँ खे गये?
वही लोग हक़ पर हैं सुन लीजिये!
सरापा जो गौहर की जाँ हो गये!
कोई क्या डरायेगा डनको भला
जो गौहर की तेग़ोसनाँ हो गये
बताये जो यूनुस ने अग़राज़े गौहर
मक़ासद सभी के अयाँ हो गये

४ जूर्न २०००, लंदन इंगलैंड

बसाते ज़ीस्त

क्या बसाते ज़ीस्त हो! गर इश्क़ की बाज़ी न हो
जलवा हाए हक़ ही क्या! जब हक़ की ग़म्माज़ी न हो
कारवाने इश्क़ में हैं शहसवारे रूह फक़त
क्या तक़ाज़ा इश्क़ का! जब हक़ की फैयाज़ी न हो
इश्क़ बीनी चीज़े दीगर, इश्क़ जाँ होना मुहाल
क्या तमन्ना इश्क़ की, जब इश्क़ अराज़ी न हो
इश्क़ का रिश्ता जुदा, ना बन्दगी, ना ही खुदा
लुत्फ क्या क़ानूने गशरअ़, इश्क़ जब क़ाज़ी न हो
रियाज़ुलजन्ना! एक जहाँ है दूर अक़्लो फहम से
क्यों बताऊँ राज़े गौहर जब गौहर राज़ी न हो
खुद डुबोना आपका और खुद ही तिराना है क्यों?
राज़े अव्वल, भेद मख़फ़ी का कोई साझी न हो?
हक़ परस्ती, हक़ बयानी ठीक है यूनुस मगर
क्या मज़ा हो ऐसे हक़ का जिसमें हक़ साज़ी न हो

७ जून २०००, लंदन इंगलैंड
जन्नत बीबी के ख्वाब से मुतअल्लुक़ा

अज़्मते जानाँ

गौहर की ज़ात है बेशक ज़रूरते दौराँ
सिखाई जिसने ख़लाइक़ को फितरते यज़्दाँ
खुदा से दूर नहीं कोई दौरे गौहर में
बस ज़रा चाहिए इंसाँ को हिम्मते मरदाँ
थाम लो दामने गौहर, पनाह लो गौहर की
अगर है चाहिए महशर में रहमते बाराँ
सबर आदत, तो तहम्मुल पसंद फितरत है
अगरचः रखते हैं बाज़ू में कुदरते यज़्दाँ
अहले इस्लाम मरदे हक़ से भी
माँगते हैं ज़मानते कुरआँ
क्या बने उम्मते मरहूम का अब
जिसकी क़िस्मत है हालते पुरसाँ
तल्ख़ो रंगीन है तारीख़ दीने मुसलिम की
हक़ बयानी पे कटे हाये सूरते ख़ूबाँ
बता ऐ रूहे मुहम्मद, तू अपनी उम्मत को
गौहर के रूप में फिरती है सित्वते यज़्दाँ
ग़ज़ल, क़सीदाओ नज़्मो नसर सब तेरे लिये
बताये जायेगा यूनुस बस अज़्मते जानाँ

२३ जून २०००, लंदन इंगलैंड

याद क्यों सताई हो

इस कड़े वक़्त में तेरी ही मसीहाई हो
और तेरे प्यार की हर लहज़ा रहनुमाई हो
तुम अगर प्यार से देखो तो ज़िंदगी पाऊँ
वरना मरने की धुन समााई हो
इश्क़ मुझको ना सही तेरी नज़र में तो हूँ
ग़ैर होता तो तेरी याद क्यों सताई हो
हाले दिल तुम से सिवा कौन जान पायेगा
तुम तगाफ़ुल करो! तो किस जगह सुनवाई हो
दिल नशीं! दिल की सदा सुनते हो क्या?
नफ्स के हाथों न हो जाये रूसवाई हो
बेबसी इस क़दर कि अश्क रवाँ होने को हैं
तुम अगर इज़्ने फ़ुग़ाँ दो! तो क्या दुहाई हो
जानता हूं कि आफरीन्श से है रब्ते रवाँ
ख़्वाहिशे दिल कि! इस जहाँ में भी शनासाई हो
तुमने देखी तो है कुकनस की तड़प
दीजिये ऐसी तड़प जो न कभी पाई हो
एहतियातन ख़मूश रहता हूं
वरना क्यों शक्ल ये मुरझाई हो
सोज़े दिल फैल गया ग़ज़ल में ऐसे यूनुस
जैसे इल्क़ाए गौहर से ये ग़ज़ल आई हो

३ जुलाई २०००, लंदन इंगलैंड

नज़र

मुद्दुआ ख़ूने दिल से बर आये
चाहे फिर मौत बेख़तर आये
आँख नाज़िर से नज़र बन जाये
मेरा मेहबूब जब नज़र आये
दिल महोव हो तेरे तख़ैयुल में
और तेरे प्यार से निखर जाये
तुम को सोचूं तो तुम में खो जाऊँ
तुम में खोकर मुझे क़रार आये
जब तुम्हें देखने की हाजत हो
दिल में चेहरा तेरा नज़र आये
कहते हैं दिल में तेरे रहता हूं
यही पैग़ाम आज फिर आये
मौत क्यों आये क्या मैं फ़ानी हूं
नामे गौहर पे हाँ मगर आये
तेरे क़दमों तले पनाह है मेरी
और यूनुस भला किधर जाये

१० जुलाई २०००, लंदन इंगलैंड

जशने गौहर

जशनें गौहर की मुबारकें
ये गौहर के दर की ज़ियाफतें
अहले गौहर की रिवायतें
अहले गौहर की सआ़दतें
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
तेरी ज़ुल्फे ख़म पे मैं झूम लूं
तेरे दस्तोपा को मैं चूम लूं
अहले गौहर की तूही नमाज़ है
तूही इनका दावाओ नाज़ है
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
तेरे ग़म को मैं अपना ग़म कहूं
तेरे सारे जोरो सितम सहूं
तेरे दिल की तार की लैय बनूं
तेरे ज़ख़्मों को भी करम कहूं
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
अहले गौहर जो कहलाये हैं
तेरी ज़ाते अज़ली के साये हैं
दाएराए गौहर में आये हैं
ख़ुद तेरे अपने सराहे हैं
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
यूनुस बताये तो किस तरह
हुब्बे गौहर में मज़ा है क्या
ये मज़ा है जामे रियाज़ का
जोनहीं पिया तो नही जिया
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर

२० नवम्बर २०००, लंदन इंगलैंड

प्यार की सौग़ात

रियाज़े मन या रियाज़े जानाँ, दिल में आना आपका
गुनचाए दिल का खिलाना, मुसकुराना आपका
तू शमा है प्यार की और मैं हूं दीवाना तेरा
मेरा दिल तेरा ठिकाना और समाना आपका
किस नबी के रंग में रंगना, किस खुदा को पूजना
तुझमें रंगना तुझमें खोना, पूजना भी आपका
रियाज़ की नगरी में रहना प्यार की सौग़ात है
प्यार करना प्यार देना है तराना आपका
है समझना ख़ल्क़ का, और ये समझाना मेरा
कोशिशें मेरी हैं लेकिन है फँसाना आपका
अंबिया की क्यों सुनूं और क्यों बनूं मैं पारसा
मैं बना आदम नहीं, हूं दीवाना आपका
क्यों ग़मे दौराँ से डर कर मैं परेशानी सहूं
ग़म गुसारीओ तसल्ली और ज़माना आपका
कसमसाना रूह का और गुगुनाना दिल का है
नग़मए यूनुस ये लेकिन है फ़साना आपका

३० नवम्बर २०००, लंदन

शहज़ादीए गौहरशाही आनिसा फरह नाज़ की ख़िदमत में

गौहर की नज़रों में मैं आ गई
अपने पिया के मैं मन भा गई
कैसी नज़र थी जो नहला गई
उनकी लजा से मैं शरमा गई
ये ज़िन्दगी कितनी बेज़ीस्त है
मरकर मैं तुझपे सकूं पा गई
ज़ुल्फ़ों के साये में तेरी हंसी
रम्ज़े फ़िना मुझको समझा गई
आ़रिज़ की लाली बुलाती रही
सांसों की उलझन सबा पा गई
दुनिया ने जब भी ढकेला मुझे
तो गौहर की बाहों में मैं आ गई
कैसी मुहब्बत कहाँ का जुनूं
तेरी इनायत ही काम आ गई
यूनुस तुझे क्या ख़बर कि उन्हें
उनकी सख़ावत लजा सी गई

८ मार्च २००१, लंदन

रूह गुमनाम

कैसी जन्नत? कहाँ के हूरो कसूर?
नहीं, नहीं है, तेरे वास्ते शराबे तहूर
नहीं मक़ाम तेरा, खुल्द या फिरदौसे बरीं
तू है वासी वहाँ का, है जहाँ बस इश्क़ो सुरूर
तू बना आदमो इसराईलो इमरान नहीं
तू है वो कि, नहीं जिसकी ख़बर खुद तेरे हुज़ूर
तुझको क्या समझेंगे दीदारे ख़ुदा के तालिब
तू वहाँ से है, जहाँ कुछ भी नहीं मस्तूर
तू था मदफून अज़ल से ही क़बाए हक़ में
तेरे आने से हुआ, राज़े इलाही का ज़हूर
गौहरी राज़ है बन्दों का ख़ुदा हो जाना
राज़ क्यों राज़ रहा, जब हो गया सपुरदे सतूर
अहले हक़ दीगर, अहले गौहर चीज़े दीगर
मा सरापा तालिबे हक़, ओ मतलूबे हुज़ूर
रबूबियत की ज़द में है आले आदम तमाम
तू हर इक हद से परे, है जहाँ न रब न ग़ुरूर
यूनुस हर राज़ मचलजता हुआ लब पे आये
लबकुशाई के लिये शाही इजाज़त हो, ज़रूर

१५ अप्रैल २००१, लंदन

रम्ज़े शनासाई

इंसान के परदे में है किरदारे किबरियाई
समझी है जिसे दुनिया, मेहदीओ गौहरशाही
चाहा कि ला मकाँ से मौजूदे मकाँ जब हो
सूरतगरी से अपनी, सूरत है फिर बनाई
क्योंकर उसे पहचाने कोई अहले नज़र आख़िर
नज़्ज़ारा उसका क़ैदे नज़र से हुआ हरजाई
मकरो फरेब इंसाँ कुछ कारगर नहीं है
तदबीर, गौहरशाही ने कुछ ऐसी है फरमाई
किस किस नबी को समझूं किसको ख़ुदा पुकारूँ
जामे रियाज़ पीकर, देता नहीं सुझाई
बाज़ू में बैठने को कुरबत जो समझले
उस शख़्स की हालत पे मैं देता हूं दुहाई
आँखों से दूर, दिल से जुड़ा, कुर्ब समझिये
गौहर ने ये इक रोज़ मुझे रम्ज़ बताई
यूनुस हिदायतों के लिये कोई तो मंज़िल हो
मंज़िल न रहगुज़र कोई कैसा हूं तमाशाई

२६ अप्रैल २००१, लंदन

जिन्से आदम

जो मिला ग़र्ज़ से मिला हमसे
बेवफाई का क्या गिला तुम से
जिन्से आदम है फितरतन बेवफा
क्या तवक़्क़ो और क्या सिला तुमसे
जब तेरे ख़मीर में है दग़ा
फिर कभी होगा क्यों भला तुमसे
आदमी, रब का दोस्त हो जाये
कैसे पुर होता ये ख़ला तुमसे
मरज़ीए हक़ जो कभी अज़ल पे हावी हो तो
ना ख़लफ़ नफ़्स से बिगड़ा ये फैसला तुमसे
दिल जो गौहर ने मुस्तआ़र दिया
मकरो ऐ़यारी से फिसला तुमसे
इश्क़े गौहर, अमानतन देकर
हम ये समझे कि है संभला तुमसे
इश्क़ क्या बंदगी भी कर न सके
गौहर कहते हैं बरमला हमसे
अहदो पैमाने लाल बाग़ हैं क्या
जोड़ना था ये सिलसिला तुमसे
रेगज़ारे कोटरी में बाल अटे
कि बने रूहानी क़ाफिला तुमसे
कहा ख़ुदा ने सिसकती रूहें, बिलकते क़लूब
ऐ गौहर, पाएगी इंसानियत जिला तुमसे

हमको मनजूर था जो अहद हम ख़ुदा से किये
वरना हम जानते थे होगी क्या फलाह तुमसे
बेवफ़ाई की तेरी दास्ताँ है है तारीख़ी
हाँ ख़ुदा और मुहम्मद भी हैं नालाँ तुमसे
यूं तो हम शाहे इश्क़, मालिके तख़लीक़ भी हैं
हाँ परस्तार मिले हमको दिलबराँ तुमसे
हम समझते रहे जिसे मरहम
वो था सीने पे आबला तुमसे
लम्हाए फिक्रिया है यूनुस ये
क्या तवक़्क़ो थी क्या मिला तुमसे

२८ अप्रैल २००१, लंदन

जुस्तजूए यार

जुस्तजूए यार में हस्ती को खोना चाहिये
मा सिवाए यार बस गुमगशता होना चाहिये
जो मिजाज़े यार में आये वही हक् जानिये
नाज़ुकीए रम्ज़े गौहर को समझना चाहिये
क्यों बताऊँ ख़ल्क् को, जो कि नहीं गौहर शनास
है जो गौहर आशना उसको बताना चाहिये
जिनको चुनना था वो रूहें कबकी गौहर की हुईं
है भला इसमें कि बस खुद को समझना चाहिये
क्या वसीले से बने तारीकियाँ जब अज़्ल हों
जो गौहर देदें उसी पे सब्र करना चाहिये
गर गौहर से मांग कुछ तो मांग ले ज़ाते गौहर
इस तरह गुम कर कि खुद को गौहर बनना चाहिये
बस यही है इश्क् और ये ही पयामे शौक् है
आगहीए हस्ती का वाज़ेह क्रीना चाहिये
बज़्में हस्ती में सदारत जब गौहर की हो गई
महफ़िले शाही में गौहर शाही होना चाहिये
दिल नज़र, जज़्बात में पेवस्ता जब गौहर हुए
इस तरह गौहर की तस्बीह को पुरोना चाहिये
ख़ल्क् में मशगूल होकर, जुस्तजू गौहर की है
है अ़बस जो जुस्तजू क्योंकर वो होना चाहिये
मैं हवाए शौक् से कहता नहीं यूनुस कभी
जो समझ गौहर ने दी उसको समझना चाहिये

१३ मई २००१, लंदन

बयाज़े रियाज़

होके ज़म ज़ाते गौहर में हो जा हमराहे रियाज़
कर हवाले जानो तन फिर देख क्या चाहे रियाज़
हाँ क़सीदाओ ग़ज़ल भी ठीक है कहना मगर
पर कहो ऐसी ग़ज़ल कि मन में बस जाये रियाज़
है ख़ुदावन्दों का मौला जिसको हम मेहदी कहें
ये समझदारी कहाँ थी पस ये समझाये रियाज़
ईसाओ इदरीस से अपनी शनासाई क़दीम
जिन्से अल्लाह से जुड़े हक़ ये फरमाये रियाज़
जिस्म ख़ाकी, शक्ल पापी, पर ख़ुदाई सिफ्त है
सूरते इंसाँ में मौला, है ये बंदाए रियाज़
थे अज़ल से, आस्तीने रियाज़ में मस्तूर ये
फिर किया जब क़स्दे दुनिया, आये हमराहे रियाज़
जबकि तुझ बिन कुछ नहीं, फिर किसके आगे ये झुकें
एक किरदारें ख़ुदा है वो भी सायाए रियाज़
क्या ग़रज़ इनको ख़ुदा से, क्यों उसे ये जानते
हैं तजल्लीए रियाज़, ये सालिके राहे रियाज़
जिस नगर से आये हम, वाँ का हर बासी ख़ुदा
जिन्से ख़ुदा से हो तो बस लाज़िम है इक़्तिदाए रियाज़
नाज़ुकीए मामिला फळमी अता तो कीजिये
ताकि अहले हक़ भी समझें क्या है मनशाए रियाज़
है दलीले फ़ज़्ल कि ये ज़म हुए तुझमें रियाज़
वरना फिर कैसा करम, दिल में न गर आये रियाज़
क्या अज़ल और अबद जबकि ज़माना ही नहीं
हम ज़माने से परे भी गुम थे बस राहे रियाज़
सब ख़ुदाओं का ख़ुदा सरदार है वो दिलरूबा
मस्लके यूनुस यही है, ये ही लिख जाये बयाज़

२६ मई २००१

इक़्तिदाए रियाज़

है दलीले फ़ज़्ल कि ये ज़म हुए तुझमें रियाज़
वरना थे किस काम के जलवाए हक़ नाज़ो नियाज़
थे अज़ल से, आस्तीने रियाज़ में मस्तूर ये
फिर किया जब क़स्दे दुनिया आये हमराहे रियाज़
क्या ग़रज़ इनको खुदा से, क्यों उसे ये जानते
ये हैं तख़लीक़े रियाज़, इनका मुक़द्दर है रियाज़
जबकि तुझबिन कुछ नहीं, फिर किसके आगे ये झुकें
एक किरदारे खुदा है वो भी सायाए रियाज़
जिस नगर से आये हम, वाँ का हर वासी खुदा
जिन्से खुदा से होतो बस लाज़िम है इक़्तिदाए रियाज़
सब खुदाओं का खुदा सरदार है ज़ाते रियाज़
मस्लके यूनुस रियाज़ और रियाज़ ही उसकी बयाज़

२९ मई २००१

फ़ल्सफ़ाए इश्क़

क़रीब जानके वोह दूरियाँ बढ़ाता रहा
फ़ल्सफ़ा इश्क़ का समझा तो इश्क़ जाता रहा
दवामे इश्क़ की ख़ातिर वो दूर होता गया
अगरचः आइनाए दिल में मुस्कुराता रहा
नज़र से दूर तो यक्लख़्त कर दिया उसने
मगर वो ख़ानए दिल में भी घर बनाता रहा
वो दूर करके मुझे खुद भी हो गया बेचैन
रसूमे दुनिया बहरकैफ़ वो निभाता रहा
फ़िराक़ो हिज्र के ग़म हाये जाँ उसी ने दिये
फिर मेरी आह पे शबेग़म भी वोह मनाता रहा
फ़साने मेरी मुहब्बत के कहके आलम को
मुझे वो रेगज़ारे अक़्ल में भटकाता रहा
अहदो पैमाँ भी लिये उसने राहे उल्फ़त के
क़दम क़दम पे मुझे फिर भी आज़माता रहा
क्यों फ़रामोश करूँ उसके सितम हाये विसाल
उसका हर ज़ख़्म सफहे दिल पे जगमगाता रहा
जिनकी ख़ातिर वो अपना चैनो सकूँ खो बैठा
उन्हीं से तंग पड़ा और झुंझलाता रहा
रियाज़ भूल जाने जैसी कोई चीज़ नहीं
उसी में खोता रहा जितना उसे भुलाता रहा
यूनुस उस दुशमने जाँ से शिकायतें क्यों हो
खूँ की मानिन्द रगो पै में जो समाता रहा

७ जून, वरजीनिया अमेरिका २००१

तेरा भेद न पाये कोई

तेरा भेद न पाये कोई तुझको समझ न पाये कोई
गोयाई में भी है ख़मोशी, राज़ न पाये कोई
इश्क़े खुदा का करे उजाला अपना लहू जलाके
इनके लहू की कुर्बानी से रब को पाये काई
कभी पयम्बर कभी खुदा है इनके रूप में ऐ दिल
इनको मिल कर सभी को पाये क्यों घबराये कोई
खुदा कभी जो रूप में इनके आकर ग़ज़ब है ढाये
इनका दिल भी तड़पे है पर देख न पाये कोई
इनके दम से भरम खुदा का इनके दम से इश्क़
क्यों न भला फिर क़दमों में इनके गिर न जाये कोई
इनको पाकर भूला रब को छोड़ दिया इस्लाम
ये ही खुदावन्दों का खुदा है रब क्यों पाये कोई
जो कुछ जाना मैंने अबतक वो कैसे समझाऊँ
समझाने की बात अगर हो तो समझाये कोई
रूहे रियाज़ है बयाज़ ये मेरी, राज़ हुए उरियाँ
ग़ज़लें कहता हूँ पस यूं कि समझ ही जाये कोई
गौहर देखा सबने लेकिन रियाज़ रहा राज़े पौशीदा
रियाज़ को क्यों कर जाने जबकि देख न पाये कोई
रियाज़ असल ला रियाज़ नक़ल ये राज़ किया बेपरदा
यूनुस रियाज़ रियाज़ करे ख़्वाह समझ न पाये कोई

१६ जून, २००१ लंदन

तनहा

वो लड़ रहा है मसाइब से भला क्यों तनहा
वो मसीहा है जहाँ भर का कहो यूं तनहा
इब्न मरियम को भी है उनका सहारा मतलूब
वो ही ईसा का है सुनो, यूं कहना
किसमें हिम्मत है कि वह उनका मददगार बने
वह खुद शिकार है तरकीबे खुद का, यूं कहना
उनकी मनशा है इस्लाह ज़माने भर की
वरना क्यों सारे ज़माने का सितम यूं सहना
कोई पूछे कि गौहर शाही की हस्ती क्या है
हाँ कहो! पहलूए दिल से है सदा खूं रिसना
कौन कब जानिये उनसे क्यों जुदा हो जाये
रहे सलामत ये जज़्बे अन्दरूँ अपना
मसाहिबत के तक़द्दुस से बेखफ़बर यूनुस
संगते रूह से हुआ तेरा अन्दरूँ उनका

५ अगस्त, २००१ लंदन

नज़्मे हुदा

ज़िन्दगी बीतेगी अब जहदे मोसलसल की तरह
तुझको हर गाम पे पाया मैंने साहिल की तरह
ये मुहब्बत तो है एहसास कि मौजूद है तू
यही एहसास जावेदाँ है मेरे दिल की तरह
दूर होकर भी मेरे सामने तू रहता है
तू मेरी बज़्म में मौजूद है महफिल की तरह
जब तेरे लम्स का एहसास मुझे होने लगे
तब तेरी याद है काटे मुझे क़ातिल की तारह
कैसी उल्फत, कहाँ का इश्क़, क्या वफ़ादारी
तू धड़क्ता है मेरे सीने में इक दिल की तरह
कोपिलें आँख हुईं, तब हुए अबरू गुलाब
तू मेरी हस्ती में खिलता है एक कोमल की तारह
तू मेरी रूह का सिंघार और शबाब भी है
तू मेरे मन पे है छाया हुआ आंचल की तारह
तू जाने शम्सो क़मर, ताबो चमक नज्मे हुदा
यूनुस ज़ुल्मत का था मारा हुआ झिलमिल की तारह

१८ अगस्त, २००१ लंदन

ख़ामोश हैं लब!

ख़मोश हैं लब और नज़र बोल रही है
चेहरे पे उदासी भी अब पर तौल रही है
ये कैसी मुहब्बत है कि वहशत भी ख़फ़ा है
वीरानिए उनवाँ की ज़ुबाँ खोल रही है
अब कुछ तो मदावा हो इस आशुफ्तासिरी का
बेदाद रसी हालते जाँ झूल रही है
कहने को बहुत कुछ है पै क्योंकर वो बयाँ हो
जो राज़ मेरे दिल की ज़ुबाँ खोल रही है
हम जानते हैं उनको भी अशकों की ख़बर है
आँखों की नमी दर्दे गौहर तौल रही है
अशकों की ज़ुबाँ ठहरी जो मायूब तो यूनुस
अब हालते दिल, दिल की ज़ुबाँ बोल रही है

२१ अक्तूबर, २००१ लंदन

वफ़ा शिअ़ारी है दीं हमारा

गौहर से गर तुम वफ़ा करोगे, तो हम भी तुमसे वफ़ा करेंगे
गौहर से गर तुम जफ़ा करोगे, तो हम भी तुमसे जफ़ा करेंगे
वफ़ा की ज़द में ये दोस्ती है, कि हुब्बे गौहर है कार फ़रमा
वो जिनसे रूठे तो हमसे छूटे, गौहर की हम इक़्तिदा करेंगे
ये सारे रिशते, ये सारी ख़ुशियाँ, गौहर से पैहम, गौहर से क़ायेम
गौहर से रिशता जो ना हो दायेम, तो ऐसे रिशते का क्या करेंगे
कभी तअ़ल्लुक़ था तुमसे ऐसा कि जैसे कोई अटूट अंग हो
वजह शनासाई था जो रिशता, उसे अब ना आशना करेंगे
क़राबतें दूरियाँ हुईं अब, कि जोशे उल्फ़त उतर गया है
न नाव उल्फ़त, न बहरे गौहर, अब ऐसे में क्या दुआ करेंगे
हैं हम मुक़ल्लिद मुहब्बतों के, वफ़ा शिअ़ारी है दीं हमारा
ख़मीरे रूह में वफ़ा गुंधी है, वफ़ा की हम इन्तिहा करेंगे
वो जिनका शेवा था जाँ निसारी, बने शिकार अपनी ख़्वाहिशों के
शिकारी बनके हुमा के, यूनुस वो दिल के जज़्बों का क्या करेंगे

१२ अक्तूबर, २००१ वरजीनिया अमरीका

मुख़बिरे रियाज़

सारे आलम पर हुकूमत करता है साया रियाज़ का
मैं नहीं कहता ये फरमाया हुआ है रियाज़ का
हद्दे अहमद तो मुऐयन कर चुका है रब्बे अहमद
सब हदों से है परे मख़फ़ी ठिकाना रियाज़ का
रियाज़ुल जन्ना, रियाज़ का आलम जहाँ बस रियाज़ हैं
वो उसे देखे जिसे हासिल परवाना रियाज़ का
क्यों गौहर के मकर में आये जिसे हासिल रियाज़
मैं हूं अ़ब्दे रियाज़, मेरा सिलसिला है रियाज़ का
ऐ गौहर! जलवा दिखा आलम को, ज़ाते रियाज़ का
बोल बाला दो जहाँ में हो अब आले रियाज़ का
जो गौहर पे है फिदा उसपर करम की भीक हो
रियाज़ से जो मुन्सलिक हैं उनपे साया रियाज़ का
हैं गौहर गोशाए ख़िल्वत में उन्हें समझाइये
दिल गवाही देता है इल्क़ा है दिल पे रियाज़ का
मेहदीओ अवतार सब ही रूप हैं उस ज़ात के
असल सूरत रियाज़ है, कहता है मुख़बिर रियाज़ का
कीजिये उनपर करम जो दुआए मग़फिरत तेरी करें
सारी क़ौमों की शिफ़ाअ़त करता है मुखड़ा रियाज़ का
मैं जुदाई क्यों कहूं , हर लहज़ा की हमराही है
लिख रहा यूनुस मगर हाँ क़ौल है ये रियाज़ का

१५ दिसंबर, २००१ लंदन, इंगलैंड

इमाम मेहदी गौहरशही और
‘‘रियाज़ मस्तूर’’

इक हस्ती गौहर शाही की जो सबको प्यारी लगती है
जिसका सूरज, चाँद पे साया है, जिसकी भोली सूरत लगती है
मख़्लूक़ को फ़ैज़याब करे और सोहबते रियाज़ पे नाज़ करे
जिस हस्ती में गुम अहमद है जो इस दुनिया का मेहदी है
गौहर शाही इस आलम का लामिस्ल मसीहा लगता है
हर क़ौम को जिसने प्यार दिया, हर क़ौम गौहर पे मरती है
अब गौहर गोशा नशीं हुए तो रियाज़ जमायेगा सिक्का

जो वाबस्ता हैं गौहर से, उन लोगों की,
ऐ मुख़बिरे रियाज़, महजूब सी हालत लगती है

हाँ रियाज़ असल, ला रियाज़ नक़ल, अब नक़ल हुई है ओझल
जो पेवस्ता हैं रियाज़ से हाँ अब उनकी हुकूमत लगती है
उन लोगों की क्या पूछते हो, जो हो गए ज़ाते रियाज़ में ज़म
उन लोगों की शख़्सियत में बस हस्तीये रियाज़ झलकती है
यूं तो गौहर भी मालिक हैं पर मालिकुल मुल्क बस रियाज़ ही हैं
अब ढूंढो रियाज़ को रियाज़ियों में अब इनकी गुफ्तगू चलती है
यूनुस भी था महजूब मगर जदू रियाज़ ने रियाज़ी कीती ए
असी भुल गये मेहदीओ गौहर नूं बस रियाज़ दी तस्बीह कीती ए

१५ दिसंबर, २००१ लंदन

सुख़न आलूद

हाले दिल, हाले बयाँ पर ही तो मफ़कूद नहीं
सैकड़ों ऐसे भी ग़म कि सुख़न आलूद नहीं
हिस्सो इदराक हो पैमानए ग़म हाए हबीब
नाज़ुक अन्दाज़ ख़मूशी है जो मौजूद नहीं
सतहे दिल से हरारए ग़म उठे तो दिल जाने
इज़हारे ग़म किसी भी तौर उन्हें मनज़ूर नहीं
ग़ैबते ग़म रहे पोशीदा और तदबीर अ़याँ
तमाशए ग़म कभी भी शेवए महमूद नहीं
ग़मे महबूब मोतक़ाज़ीए मदावात फक़त
जाँ निसारी हो हरचन्द शरम आलूद नहीं
यूनुस क्या हाल हो उन साहिबाने हाल का भी
जो शरीके ग़म हैं पै क़ातिले शहूद नहीं

१६ अक्तूबर, २००१ लंदन इंगलैन्ड

मिस्ले गौहर है भला कोई

अहले गौहर जो कहलाये हैं, दायेराए गौहर में आये हैं
तेरी ज़ात अज़ली के साये हैं, तेरे अपने खुद के सराहे हैं
ज़ौक़े तमाशा दिया जिन्हें, शौक़े वफ़ा भी दिया उन्हें
तल्ख़ीं है ज़ुल्मो जबर सहें, फिर भी गौहर को ही हक़ कहें
न हुआ न होगा न है कोई मिस्ले गौहर, भला है कोई
जिन्से ख़ुदा है तो है कोई, मिस्ले गौहर नहीं है कोई
रंगे तरीक़त बेकराँ तनवीरे मारफ़त लामकाँ
तदबीरे हिकमत जिन्से जाँ, पै गौहर का भी है कोई गुमाँ
यूनुस को क्यों कर गुमान हो कि गौहर था और अब नहीं रहा
वो गया तो मैं कैसे हूं जी रहा,
मरहबा गौहर मरहबा गौहर मरहबा गौहर मरहबा गौहर

७ दिसंबर, २००१ लंदन

मिस्ले गौहर है भला कोई

निगारे आँसू

है निशाँ वस्ल का आँखों में ये प्यारे आँसू
इनके दीदार का है ग़ुस्ल ये प्यारे आँसू
नफ्स का इज्ज़ गुनाहों का कफ्फारा है यही
सजे रहें तेरी आँखों में कुंवारे आँसू
निकल के आँख से गिर जाये ज़मीं पर जो कभी
इक नई खेती बना दें ये तुम्हारे आँसू
रहमते बाराँ की मानिन्द उन्हें बहने दो
पयामे शौक़ का मनज़र हैं ये प्यारे आँसू
नक़्श पिन्हाँ की नमूद इन्हीं से ताबीर है क्या?
बहरे सोज़ाँ का बने धारा, ये सारे आँसू
इश्क़ बारी से ही होता है तुख़्मे इश्क़ जवाँ
रियाज़े इश्क़ की आबयारी निगारे आँसू
इन्हीं के दम से है क़ायेम वजूद सोज़े मन
बस कि सरमायए जाँ हैं ये दुलारे आँसू
सजाओ पलकों पे मोती की तरह
है मुहब्बत का सहारा यही प्यारे आँसू
यूनुस कभी न आँख से गिरने देना
उनको लगते हैं तेरी आँख में प्यारे आँसू

चलिये यूनुस

चलिये यूनुस उस जगह कि मर्दो ज़न कोई न हो
रियाज़ की माला जपें, और रियाज़ बिन कोई न हो
रियाज़ का इसरार हो कि रियाज़ की तकरार हो
यूँ बने ऐसी ग़ज़ल कि जिसकी धुन कोई न हो
रियाज़ के जलवों में खोकर रियाज़ में ज़म हों सभी
रियाज़ ही मालिक हो सबका रियाज़ बिन कोई न हो
ना ख़ुदाई का हो झगड़ा न नबूवत का फ़रेब
रियाज़ की नगरी हो लेकिन अमरे कुन कोई न हो
लानते दोज़ख़ न हो और लालचे उक़बा न हो
रियाज़ की ख़ालिस वफ़ा हो और बहिशती धुन न हो
रियाज़ की महबूबियत से महकी हो सारी फ़िज़ा
इन ख़ुदा वालों के वॉ लानो तन कोई न हो
रियाज़ हो और रियाज़ से पैवस्ता जो भी है वो हो
रियाज़ ही माशूक़ हो और जानेमन कोई न हो
तुझको देखें, तुझको चाहें, तुझमें गुम नामो निशॉ हो
रियाज़ की उलफ़त हुनर हो और फ़न कोई न हो
रातो दिन से तंग हूँ मैं, वक़्त की ये क़ैद क्यों
तुझको हरदम देख पाऊँ , सालो सन कोई न हो
रात ही को तुझसे मिलना गर मुक़द्दर है मेरा
रात दायेम रात हो पस और दिन कोई न हो
रियाज़ मसजूदे इलैह हो और सजदे हो मेरे
रियाज़ ही की हो तजल्ली और किरन कोई न हो
तौफ़े काबा हीच है जबकि ख़ुदा है बरतरफ़
मन करे अब तौफ़े रियाज़, और मन काई न हो
मन वही जो मन हो तेरा, मन बने मंदिर ये मेरा
तन वही जिस तन में तू हो और तन कोई न हो
यूनुसे बा रियाज़ तुझको ये जहॉ क्यों रास हो
तू वहीं को चल जहॉ पर हमसुख़न कोई न हो

लंदन इंगलैंड......21 दिसंबर 2001

इश्क़े रियाज़

निफ़ाक़ नाम है दूई का, और इख़तिलाफ़े अमल दिल
ईमानो मुहब्बत का मुक़ाम है पस वसल दिल
नूरे ईमान है गर दिल मैं तो बंदा मोमिन
मुहब्बत जाँगुज़ीं हो जाये तो है असल दिल
रिश्तये इश्क़ है इस रूह के ज़म होने का नाम
जुज़े रूह ज़म अगर हो जाये तो है फ़सल दिल
मुहब्बत करने से होती नहीं, पर हो जाये तो हक़ है
इश्क़ होने से नहीं होता, हो जाये तो है नक़ल दिल
रूह गर तख़लीक़ रूहे रियाज़ हो तो है रिश्तये इश्क़
रूही रिश्ते की ये सौग़ात है पस अजल दिल
गर कोई रियाज़ से वाक़िफ़ हो तो आशिक़ ठहरे
यूनुस यही ताबीर रियाज़ और यही है असल फ़ज़ल

लंदन इंगलैंड....25 दिसंबर 2001

मरहलाए इश्क़

मरहला इश्क़ का वैसे तो जॉं गुसल है मगर
सलामतीये नज़र भी कमाल का है समर
यूँ तो अमवाल और असबाब लुटाते हैं हबीब
नज़र से फिर भी गिरे कोई तो बाक़ी है कसर
इम्तेहॉं मरहलावार और मंज़िलें बेशुमार
कभी अफ़्आल कभी इनफ़ास का करना है सबर
क्या तवोक़्क़ो थी, क्या उम्मीद तुमसे गौहर को?
सब ही का किब्र और इनाद ने किया है हशर
किसी पर ऐतमाद इतना किया था गौहर ने
हर मुहासबा से हो गया वो बेख़बर
कोई जो ऑंख का तारा बनाप था गौहर की
वही फिर ऑंख का नासूर बन गया बेख़तर
ऐतबार किसपे यहॉं कीजिये अब यूनुस कि
राख का ढेर, अलापे किब्र से होता है शरर

लंदन इंगलैंड....28 दिसंबर 2001

अँखियों का झरोंका

झराकाये गौहर मफ़्तूह हुआ है.....सबाए रियाज़ की ठंडी हवा है
ये ख़ारे नफ़्स की कैसी चुभन है?.....नसीमे बादे गौहर की दवा है
चिराग़े अक्से गौहर जल रहा है.....अंधरा ग़ैरियत का जा रहा है
किसे मालूम गौहर जाने महफ़िल.....हुआ तो रंगे महफ़िल खिल रहा है
गौहर फ़ानूसे नूरे कुल जहाँ है.....ये शोलाए गौहर का इक गुमाँ है
गौहर मीनारए अज़मत जहाँ है.....ये बंदा अज़मते गौहर निशाँ है
मेरी तनहाइयों में दर्द क्यों है?.....हुजूमे ख़ल्क़ पे ग़फ़लत गुमाँ है
ये उल्फ़त क्या है यूनुस, कुछ पता है?.....ये ख़ूनाबे जिगर का इक फ़ुग़ाँ है
इश्क़ का कारवाँ अब कूच पर है.....कमंद डाले मुसाफ़िर जो जवाँ है
बादबाँ खुलने से पहले जो नशीनद हो गया..वही कश्तीये गौहर में बैठ कर रफ़्तो रवाँ है
मुसाफ़िर को लुभाती है ये यूनुस.....तेरी आवाज़, जरसे कारवाँ है

अबूधाबी....2002

रहबरी मेरी

इश्क़े रियाज़ कर रहा है रहबरी मेरी
मिट जाओ नामे रियाज़ पर, है दिलबरी मेरी
करता हूँ तवक्कल मैं ज़ाते रियाज़ पे हर दम
करता है अब तो नफ़्स भी पैरवी मेरी
कुछ ना मिलेगा कशफ़ से हालात जानकर
करता है रियाज़ दूर से ही ख़बरगीरी मेरी

गोशये तनहाई

गोशये तनहाई तेरे वासते हयात है
फ़ितना परवर दौर की हर बात खुराफ़ात है
कर यक़ीं गौहर पे क़ायेम और दुनिया छोड़ दे
क़ल्बे मुज़तर, दीदएतर, इसकी इशारात है
दिल सहम जाता है मेरा जब कोई दावा करे
दावाए बेजा, यक़ीनन किब्र की सौग़ात है
मेरे मालिक, मेरे मौला, मेरे गौहर रहम कर
रहम की नज़रे करम हो आफ़तों की साअ़त है
मेरे मालिक मैंनं चाहा राज़ तेरे खोल दूँ
राजत्र का खुलना तो पस फ़तहे दिलो जज़बात है
जिन दिलों में तू है बसता, किब्र कैसे हो वहाँ
किब्र का दावा तो इब्लीसियों की करामात है
दिल में है तेरे ठिकाना, गौहरे नायाब का!
दिल में गौहर का यूँ होना, हर हुदा की बात है
यूनुसे माले गौहर घबराता है क्यों इस क़दर?
तू गौहर का माल है पस तू गौहर के हाथ है

लंदन 15 मार्च....2002

खूए शाही

भेस भर के मेहदी का आया यहाँ मौलाए कुल
जिसका डंका बजता है कौनो मकाँ, हर जाये कुल
मक़सदे गौहर हुआ कि हर जौहरे नायाब को
अपने मन के देश में कर दे उसे सरमाये कुल
बा इरादा हो के जब सूए ज़मीं आया गौहर
ढूंढने निकला वो इस ख़ित्ते पे भी अ़नक़ाये गुल
चलते-चलते इक मुक़ामे इश्क़ वो गोया हुआ
मक़सदे पिनहाँ बता कर कहता था कि हाये गुल
खूए शाही ढूंढता था खूए इंसानी में वो
जिसको देखा इज्ज़ का पैकर, किया अबनाये गुल
इक तरीक़े फ़क़र था सरमाया उसके हाथ में
यद्‌दे दोयम में लिये बैठा था वो ईक़ाये गुल
सह रहा था ख़ामुशी से सब तमन्नाओं का खूं
फिर अचानक, एक दिन लौटा वो पस असनाये कुल
आक़ाये बेमिस्ल ने फेहरिस्त जारी कर ही दी
पस गुलामी सब्त है आक़ा से और इसलाहे कुल
बशर ख़ूए शर है पस तू रियाज़ से बारियाज़ हो
ख़ूए गौहर सीख ताकि हो सके अजमाए कुल
ख़रके़ आदम, ख़ूए आदम में फ़ना रह जायेगा
ख़ूए गौहर, ख़ूए आदम से कहे इलक़ाये कुल
यूनुसे ख़ुश बख़्त रियाज़े हस्ती में महका रहे
वो रियाज़ी गुल कि जिसके हैं ये सब अजज़ाये कुल

लंदन 16 मार्च....2002

हाये अफ़सोस

हाये अफ़सोस तुझे पाके भी ये पा न सके
दिल झुका के भी मोज़ी नफ़्स झुका न सके
फ़ितना परदाज़ अ़नासिर की भेंट चढ़ने लगे
शिकार साज़िशे दुशमन हुए हक़ पा न सके
हैं दस्ते गिरेबाँ बाहम ही ज़ाकरीं
हक़ तो कुजा! ये लोग खुद को पा न सके
अव्वल तो दस्तरस में नहीं इनके कोई चीज़
इक मौक़ए वफ़ा था जो ये बचा न सके
बाहमी चपकलिश, कीना, इनाद इनका शिआ़र
यही वजह है कि नज़रे गौहर में आ न सके
जतन इसलाह के बेकार हो गये यूनुस
गौहर के नाम पर भी तुम इन्हें समझा न

मालिक गौहर की अपने बंदे को नसीहत

आनन फ़ानन मौत गर वाक़ै तेरी हो जायेगी
तेरी मुशकिल दूर और मंज़िल तुझे मिल जायेगी
गर संभल सकता है तू फिर दिल को समझा ले अभी
वरना फिर क़ौले अजल तुझपर सनद हो जायेगी
अपने इश्क़ बे करॉं को रोक तदबीरों से तू
वरना दुनिया इश्क़ से हासिद तेरी हो जायेगी
सजदे में सर रख दिया यूनुस ने और फिर ये कहा
ऐ मेरे मालिक! मुझे मंजूर है मौत आये भी

25 मार्च....2002 सुबह 8:30
लंदन इंगलैंड- एक ख़्वाब से माख़ूज़
शायेर क्या मालूम नहीं?

नख़ले गौहर

मक़सदे ज़ीस्त जबकि ठहरा तू
दिल की दुनिया में कर बसेरा तू
मौत गर तुझसे मिलने की है तदबीर
मेरे सूरज को कर अंधेरा तू
आगही ज़ीस्त की अगर दी है
तेरे अपने को करले तेरा तू
इंतेहाए फुग़ॉं है ख़ामुशी
अश्क का मुश्के रूह में ख़ैरा तू
आइना देख, अक्से यार है तू
ख़ुतूते जिस्म तेरे और अक्स मेरा तू
हाले दिल, हाले सरापा है तू
मेरी बेताबी का है सेहरा तू
अब चले आओ कि तरसे है निगाहे दिलबर
क़त्रए जॉं भी तू ही और जॉं का दरिया तू
नख़ले गौहर से प्यास भर यूनुस
गौहरी प्यास और है सहरा तू

25 मार्च 2002 लंदन

तुख़्म तासीर रियाज़ी फ़ितरत

यादे गौहर में चश्म तर कीजिये.....ज़िंदगी अपनी यूँ बसर कीजिये
मोमिन आशिक़ कैसे बनता है?.....रद्दे ईमान से कुफ्र कीजिये
क्या हलावत है जुल्म सहने में?.....आशिक़ी का ज़रा सफ़र कीजिये
जैसे को तैसा होता आया है.....मकर की काट में मकर कीजिये
गर जवाँ मर्दी का दावा है तुम्हें.....इश्क़ की चोटी कोई सर कीजिये
हुब्बे मेहदी की शर्त है परचार.....साथ देने की पस फ़िकर कीजिय
इश्क़ सर पर सवार हो गर तो?.....फिर ना परवाये इश्क़ो सर कीजिय
मक़सदे ज़ीस्त जबकि गौहर हो.....क्यों तमन्नाए बालोपर कीजिय
नरगिसी तुख़्म इश्क़ का हो तो.....शमए सोंज़ाँ से फिर शजर कीजिय
शजरे गौहर की शाख़े तूबा पर.....सैराबिये इश्क़ सर कीजिय
इंतेहाए समर रियाज़ी गुल है.....शजर पेचाँ की क्यों फ़िकर कीजिय
तुख़्म तासीर रियाज़ी फ़ितरत.....रियाज़ अरज़ी में कुछ शजर कीजिय
क्यों तही दामन समर ठहरूँ.....शजरे यूनुस में क्यों कसर कीजिय

1 दिसंबर 2002 लंदन इंगलैंड

मुनाजात

सूरते शायेरी, मुनाजाते गौहर शाही है
निदाए रियाज़ से अरवाह ने शिफ़ा पाई है
जिस्मे गौहर का तआरूफ़ करें तो यूँ कीजिय
अरज़ी अरवाहे मुहम्मद ने जगह पाई है
महे कामिल तेरे रूख़सार से मअ़मूर हुआ
हुस्न से तेरे हर इक चीज़ निखर आई है
सुरागे ज़ीस्त तेरे नाम पे मिट जाना है
ज़िंदगी ने तेरी ऑखों से जिला पाई है
तेरी अदाए नियाज़ फ़ी नफ़्सहे सहीफ़ा है
मसहफ़े रूए गौहर इश्क़ की सुराही है
आदमीयत तेरी दहलीज़ पर झुकी क्यों है
तेरी अ़ता से बशर ने भी की ख़ुदाई है
फ़िज़ा के रंग तेरे जल्वए रूख़सार से है
चॉदो सूरज ने तेरे रूख़ से ज़िया पाई है
हजरे अस्वद तेरे रूख़सार की अमानत है
शफ़ीए कुल जहाँ तस्वीरे गौहर शाही है
मेहदी इक परदए अनवारे किबरियाई है
परदए नूर में वो ज़ात यहाँ आई है
यूनुस, गौहर को, दिल का जौहर बनाइये
कसौटी, दिल का मकीं मेरा गौहर शाही हौ

बैंकाक 23 दिसंबर 2002

गौहरदारी....वफ़ादारी

गौहर शाही हम नवाई, गौहर शाही शनासाई
गौहर शाही मसीहाई, गौहर शाही दि रूबाई
गौहर शाही मेरे माही इल्तेजाए सेहरगाही
ख़िल्वते इश्क़ की साअ़त में मुझको देदे रअ़नाई
तेरा जलवा हो तेरी याद का ऑखों से मेंह बरसे
तरी जल्वत में तेरा नक़्श हो और तेरी तनहीई
शजरए इश्क़ की कोंपल में तेरी याद महके है
शोख़िये दिल भी तेरे जलवए कामिल से शरमाई
वस्ल क्या चीज़ है? ख़ुशबू को जैसे फूल की संगत
इश्क़ क्या चीज़ है? जिस्मों में जैसे रूह की पैराई
बंदगी क्या है? जैसे कोई ढूंढे अपनी फ़ितरत को
मुहब्बत चीज़ है इक दिल की दूजे दिल में बू आई
अ़ता गौहर, ख़ता यूनुस, गौहरदारी वफ़ादारी
अदाए इश्क़े गौहर यार पे सौ जॉ से मैं वारी

19 जनवरी 2003 लंदन

खुदादारी....बेज़ारी

मुनाफ़िक़ है वही किरदार जिसमें दिल की बीमारी
इश्क़े पिनहाँ अगर उरियाँ हो तो ठहरे रियाकारी
अस्त और गुफ़्त का हर हाल में रखिये तफ़ाउत कि
इश्क़ के मामिले में करना पड़ती है ये होशयारी
दरूने बतन का अस्पर है जिसको क़ल्ब कहते हैं
मुराक़िब हो के जिसपे रूह पस करती है सरदारी
ख़ल्क़ मशगूल ख़िलक़त में है और ख़ालिक़ मुख़ल्लक़ है
खुदाई इस क़दर बेज़ार हो ता क्या खुदादारी?
मुझे मालूम है अफ़साने तेरी शहनशाही के
गौहर की भीक पर चलता है और दावा किबरियाई
कहाँ से आई तुझमें ख़ूए इश्क़ क्यों नहीं कहता?
गौहर शाही के अहसानों का बदला क्या है रूसवाई?
तलातुम ख़ेज़ मौजें मेरे बहरे इश्क़ में मचलें
तेरा नग़मा खुद सताई मेरा नारा गौहर शाही
तेरी मायूसियों पर तरस खाकर मेरे गौहर ने
ओढ़ कर परदए मेहदी निभाई पस ये दुशवारी
तेरी सहराए ख़ल्क़त में कहाँ गुल इश्क़ के खिलते
गौहर शाही ने शाही आब से पस की है अबयारी
हाकिमे इश्क़ गौहर शाही, तू महकूमे फ़ितरत है
तेरा रोअ़बो जलाल नक़्ले गौहर और जफ़ाकारी
तेरी आ़दत रक़ाबत, तू हसद और किब्र का ख़ूगर
मुझे हासिल रफ़ाक़त नक़्शे गौहर की सनमदारी

29 जनवरी 2003 लंदन

मजमूअ़ए ख़याल

आईनए ख़याल में देखा करूँ तुझे
लमहे तेरे ख़याल के भेजा करूँ तुझे
रअ़नाइये ख़याल, तख़ैयुल से है तेरे
रंगीं तख़ैयुलात से पूजा करूँ तुझे
मजमूअ़ए ख़याल है इक नुस्ख़ए वफ़ा
बादे फ़ना भी तुझसे तेरी तमन्ना करूँ तुझे
आमद का तेरी हर घड़ी जलता रहे दिया
उम्मीद के चिराग़ से ढूँढा करूँ तुझे
आजाये मेरे यार तो ऑखों में बिठा कर
आज़ादे वक़्त हो के बस देखा करूँ तुझे
दुनिया को मिले जो इन्हें मतलूबे ज़ीस्त हो
मेरी तो अ़र्ज़ है यही चाहा करूँ तुझे
तेरी जुदाई दर्द का इक बहरे ताब है
शोख़ी को तेरे नक़्श का दरमॉ कहूँ तुझे
यूनुस फ़िज़ाए इश्क़ अभी साज़गार है
माशूक़े इश्क़, इश्क़ का जल्वा कहूँ तुझे
आ़शिक़ वही है तेरे मुशरिक हो दर्द का
मिट जाये हस्तो बूद, ना परेशॉ करूँ तुझे
हस्ती अ़दम के ख़ौफ़ से बेख़ौफ़ कीजिये
नापैद हो के तुझसे उभारा करूँ तुझे

पेशे नज़र है जल्वए माशूक़े जॉ गौहर
ऑखों से मुंतज़िर दिले सामॉ करूँ तुझे
आवारगीये नज़्र का क़ायेल नहीं हूं मैं
देखा है तुझको तुझसे ही देखा करूँ तुझे
ऑखों को फ़क़त अपने नज़ारे की समझ दे
हर सिम्त हमा वक़्त मैं देखा करूँ तुझे
रम्ज़े रबूबियत से मैं उक्ता सा गया हूँ
दे वो सबक़ कि मैं फ़क़त समझा करूँ तुझे
इस मसख़रा आमेज़ तख़लीक़े जहॉ में
तेरे ख़याले हक़ से शनासा करूँ किसे
अब यूँ कि दरमियान में तेरा ख़यााल है
तेरे ही वसीले से पुकारा करूँ तुझे
मिट जाये हर इक चीज़ बजुज़ अ़क्से यार के
अ़क्कासिये ख़याल से ढूँढा करूँ तुझे
फ़ुरसत मिले तो पूछ कभी दर्द की लज़्ज़त
ज़िंदॉ मिसाले ज़ीस्त में दरमॉ कहूँ तुझे
यूनुस ख़ुदाई, ख़ुद नुमाई और रियाकारी
इख़फ़ाये राज़ रख न हरासॉ करूँ उसे

२३ दिसंबर.....फरवरी २००३
बैंकाक...लंदन

ज़ुल्फ़े गौहर

जहाँ ज़ुल्फ़े गौहर में ख़म देखते हैं
ज़माने के ज़ुल्मो सितम देखते हैं
मेरी इन तरसी निगाहों से पूछो
उन्हें कितनी हसरत से हम देखते हैं
मुलाक़ात जब हो गौहर से किसी की
तो आँखों में इक बहरे ग़म देखते हैं
शबे वस्ल जब सामना हो गौहर से
मुसर्रत से आँखों को नम देखते हैं
फ़राग़त नहीं दीदे गौहर से जिनको
वो दुनिया को मिसले रसम देखते हैं
ख़ुदा और मज़ाहिब से मतलब उन्हें क्या!
जो इश्क़े गौहर में इरम देखते हैं
सनागो तख़ैयुल है हर लमहा उनका
ख़याबाने यारॉ सनम देखते हैं
सितम ढा रही है ख़ुदाई तो क्या ग़म!
क्या कम है? गौहर का करम देखते हैं
दिखाते हैं मुखड़ा बजुज़ इक निदा पर
जब आँखों को मेरी वो नम देखते हैं
बना है हरीमे गौहर जिनका दिल तो
क़दम ब क़दम है वो हरम देखते हैं
ख़ताओं की बाबत मरी कुछ न पूछो
ख़ताकार उनका भरम देखते हैं
वही सजदागाह है हमारी ऐ दुनिया
जहाँ उनका नक़्शे क़दम देखते हैं
तग़ाफ़ुल किया गर तुम याद आये यूनुस
भुला कर किसे कब सनम देखते हैं?
अमजद उन्हें क्या ख़ता की हो परवाह!
जो ज़िकरे सनम चश्मे नम देखते हैं

दौराने परवाज़ दुबई ता कोलंबो
22 फरवरीी 2003

दिलबर याद आये हैं

कोई बात करो यूनुस, दिलबर याद आये हैं
सिसकी हैं फ़िज़ायें और सन्नाटे छाये हैं
आँखों की तलब दिल की धड़कन है मेरा दिलबर
नज़रों में है वीरानी ग़म दिल ने बसाये हैं
महरूमे नज़ारा हूँ , मसरूरे तमन्ना कर
मेरे दिल ने सदा दिलबर नग़मे तेरे गाये हैं
उनका ही तसव्वुर है उनकी ही तमन्ना है
कुछ देर सही लेकिन वो बज़्म में आये हैं
भूलोगे जहाँ मुझको पाओगे वहीं दिलबर
मेरे दिल की दीवारों पर तेरे ही साये हैं
यूनुस नहीं गोया है एक आह दिले वीराँ
कुछ उजड़े हुए गुलशन, मेरे दिल ने समाये हैं
आँखों का तक़ाज़ा है दीदार मयस्सर हो
जब दिल को सदा तुमने खुद जलवे दिखाये हैं
आ़दत है इन आँखों को तेरा मुखड़ा तकने की
इन प्यासी निगाहों में आँसू भर आये हैं
बढ़ता ही रहा दिलबर इन ग़ज़लों में सोज़े दिल
तेरे इश्क़ में जल कर हुर्फ़ ग़ज़लों में समाये हैं
तुझे दिल ने पुकारा है साँसों ने बुलाया है
उलझी हुई धड़कन है साँस उखड़े जाये है
किस दम में निकल जाये यह जान बिना तेरे
यही ख़ौफ़ मुझे लाहक़ यही वसवसे आये हैं
अब जलवा दिखा दीजिये अब माफ़ ख़ता कीजिये
बुझती हुई आँखों का यह मुद्दुआ़ लाये हैं
अब आँखें परेशाँ हैं और साँस है उखड़ी सी
कुछ देर को ठहरो तो मेरे गौहर आये हैं
क्या दिल को दिलासा है इस हुरफ़े तमन्ना का
यूनुस की दुआ़ओं से गौहर चले आये हैं

अप्रैल 2003

तसलसुले रियाज़

यह तसलसुले रियाज़ का है सिलसिला, गुल दिल में रियाज़ का है खिला
यह क्या हक़ाइक़े मर्गो ज़ीस्त हैं, पै रियाज़ की यह नहीं इस्तिलाह
ठहर जाओ तलातुमे बहरे ग़म, कि यह इम्तेहॉ भी ख़तम हआ
जिन्हें डूबना था, वो बह गये, जो बचा वो अज़ली है मुआ़मिला
ये शर्रार ग़म हैं, हुसूल के, नहीं कोई इसमें हिजर का ग़म
जो रियाज़ के इश्क़ में जल गया वो रियाज़ के इश्क़ में है मुबतिला
ना नज़र का इसमें दख़ूल है, ना ज़िकर का इसमें सबूर है
दिले इश्क़ से जो जुड़ा तभी, इश्क़ का ये है दर खुला
दिया इश्क़ गरी का सबक़ जिन्हें, इन्हें इश्क़ के रूख़ भी सिखा ही दो
चले आओ छोड़के सिलसिला, जो बना है कोई दिल जला
किसे क्या ख़बर कि वो दास्तॉ, जिसमें इश्क़ की हो सरगज़िश्त
जो खुले तो बयाज़े रियाज़ है, जो जले तो रियाज़ का है दीप जला
इनही अस्तरों में प्रीत है, इन्ही पैतरों में कमात है
इन्ही अनक़रों में ज़म छुपा, इन्ही अंतरों में वो है मिला
जो मिला किसी को निशाने राह, वो मसालेहत की नज़र हुआ
जो खोली किसी ने अगर ज़ुबॉ, तो वो सूलिये इश्क़ पे है चढ़ा
यूनुस किसी को हो क्या गुमॉ, कि इश्क़े गौहर से है जिस्म में जॉ
मेरा नामो निशॉ मेरे पास है मरी हस्ती को ले वो गौहर उड़ा

15 मई 2003

हब्ले गौहर

हर नज़ारे में है गौहर पिन्हॉं.....चश्मे नाज़िर में गर गौहर आये
चश्मे ज़ाहिर की ये ख़राबी है.....गर न गौहर तुम्हें नज़र आये
हर हुदा के इमाम हैं गौहर....हर हुदा से गौहर नज़र आये
इसमें गौहर है रूह की तकसीर.....ज़िकरे गौहर से रूह निखर जाये
हर उजूए जिस्म को है दरकार.....इश्क़ की लै सब ही में भर जाये
हर नफ़्स तेरे गीत गायेगा.....तब ही यूनुस का दिल सबर पाये
काम मेरा जहाने ग़ैर में क्या?.....इश्क़े गौहर को हर नफ़र पाये
मुंतज़िर हूँ मैं उस घड़ी का जब.....इश्क़े गौहर में तन से सर जाये
यही दुआ है तेरी बारगाह में या गौहर.....हर नफ़्स तेरे दिल में घर पाये
जिसका मअ़बूद गौहर शाही है.....वही सजदए गौहर कर पाये
बस कि तौहीद है इक ज़ात में ज़म होना ही.....उसी को देखना उस पर ही जॉं बिखर जाये
बेदख़ल कर दिया ला रियाज़ को मेरे दिल से.....यही करम है अगर कोई इश्क़ी गुर पाये
इश्क़ की लौ में जला जाता हूँ.....फिर भी क्यों रूह को सबर आये
मेरी मंज़िल है अ़दम फ़िल फ़नाए रियाज़ सनम.....नमूदे रियाज़ हूँ हस्ती में गर सिफ़र आये
मन चली ख़्वाहिशों की हो तकमील.....क़ल्बे यूनुस की लै सॅवर जाये
इन्तेहाये गौहर में खोकर भी.....इब्तेदाये रियाज़ घर पाये
मंज़िलें कितनी अभी बाक़ी हैं.....रूह का बन कभी जसर जाये
जो वफ़ादारे गौहर शाही है.....ग़ैरे गौहर से क्यों ना फिर जाये
सर झुकाने को हॉं मैं हाज़िर हूँ.....नक़्शे गौहर मगर नज़र आये
तू वफ़ादारे गौहर शाही है.....लमहए इम्तेहॉं क्यों घबराये
अ़हदो पैमॉं हैं तेरे गौहर से.....हिफ़ज़े गौहर में क्यों ख़तर आये
हब्ले गौहर को थाम लो यूनुस.....तेरा मालिक ये तुझसे फ़रमाये

इज़ाफ़ा किया गया 17 मई 2003 लंदन

गौहर–गौहर करे दुनिया

गौहर से इश्क़ करे और खुदा जुदा ना करे?
हमारे क़ल्ब पे ऐसा गुमॉं खुदा ना करे
तड़प–तड़प के निकल जाये तन से खूँ सारा
गौहर–गौहर ही कहे दिल, खुदा–खुदा ना करे
खुदा गौहर की रज़ा, क्या? गौहर इस दिल की रज़ा
गौहर को छोड़ कर पाले रज़ा खुदा ना करे
वफ़ा के वासते जिसको बनाया गौहर ने
वो दिल वफ़ा न करे उनसे? क्यों वफ़ा न करे
गौहर के इश्क़ से पलकर जवॉं हो रूह जिसकी
वो दिल वफ़ाए गौहर की भी इलतिजा ना करे?
है इख़तियार हर एक दिल पे उसके ख़ालिक़ का
गौहर का बंदा किसी ग़ैर की सना ना करे
खुदा का मरतबा रब है, रबूबियत क्या है?
रिश्तए इश्क़ रबूबियत से क्यों जफ़ा ना करे?
यूनुस वो जोत जगाओ गुमाने बातिल में
गौहर–गौहर करे दुनिया, खुदा–खुदा ना करे

20 मई 2003 .....लंदन

नशेमन

सायए ग़ैर नशेमन पे गवारा ना करूँ
तू ना मिल पाये तो बिन तेरे गुज़ारा ना करूँ
ख़ाक हो जाये मेरी सारी उम्मीदें लेकिन
बजुज़ गौहर मैं किसी को भी पुकारा ना करूँ
खुदा की मुझको ज़रूरत नहीं मैं उनका हूँ
बुरा है मेरा मुक़द्दर तो सवारा ना करूँ
गौहर के नाम पे मारे कोई तो मर जाऊँ
ख़ुशी से जान दूँ गौहर से किनारा ना करूँ
जब तलक जिस्म में जॉ है गौहर की पूजा करूँ
खुदा ख़फ़ा है तो होता रहे परवाह ना करूँ
गौहर है इश्क़, बिना उजरते इबादत है
लालचे समर की उलफ़त मैं गवारा ना करूँ
यूनुस, गौहर को देखकर कहॉ मज़हब ठहरे
गौहर को देख कर ज़िकरे खुदा खुदारा ना करूँ

20 मई 2003 .....लंदन

तेरे जमाल से

तेरे जमाल से आँखों को नशा हो जाये
तेरे ख़याल से लमहों को नशा हो जाये
मेरी हस्ती को तेरे अ़नूसरे अरवाह से गौहर
ता अबद रंगे गौहर बार नशा हो जाये
यूँ बिखर जाऊँ तेरी ज़ात के तख़ैयुल में
जिस तरह तितली फ़ितरते गुल में फ़ना हो जाये
यूँ बसेरा हो तेरा दिल में मेरे ऐ गौहर
जैसे शोला जले तो दीप शमा हो जाये
अजीब चीज़ है लज़्ज़त ये शनासाई की
सबसे बेगाना हो हर चीज़ गुमॉं हो जाये
तेरे गुलाब को पा लूँ तो चुभन ख़ार की क्या!
निशाने यार से हर ख़ार निशॉं हो जाये
निशॉं ख़ता हो जिसका वो तीर ही क्या है
गौहर चलाये तो हर तीर कमॉं हो जाये
गौहर जमाओ वही महफ़िले इमररोज़ कभी
हर नफ़स देखकर तुझपे ही फ़िदा हो जाये
मौसमे इश्क़ का सावन उमड के आया है
ऐसी बारिश हो कि हर शज्र जवॉं हो जाये
हर दिले ख़ाली बना दीजिये अब क़सरे रियाज़
या फ़िर ऐसा करो यूनुस को गुमॉं हो जाये

अकतूबर 1999 अमेरिका....2 जून 2003 लंदन

गौहरियत

आज फिर क्यों ना मुसकुराये कोई.....अपनी पलके ना क्यों झुकाये कोई
हुस्ने ला मिस्ल बेनिक़ाब आया.....शम्मए दिल को अब जलाये कोई
आज फिर ज़ौक़े वफ़ा दे के गया.....अब वफ़ा से ना मुँह चुराये कोई
दामने रूह से खून रिसता है.....फिर नया ज़ख़्म ना दिखाये कोई
कौन कहता है इश्क़ मुशकिल है?.....इस्मे गौहर से दिल बसाये कोई
ज़ुल्फ़े गौहर का बाब पढ़ लीजिये.....इश्क़ की रम्ज़ यूँ भी पाये कोई
आदमीयत फ़सूने बातिल है.....गौहरीयत की लौ लगाये कोई
गौहरीयत का, इश्क़ ईंधन है.....जानिबे रियाज़ तब ही जाये कोई
यार की बात प्यार की बातें.....इन हक़ायेक़ को समझ जाये कोई
चश्मे गौहर से ख़ूब बरसी नज़र.....तिशना क़ल्बी ना अब जताये कोई
गौहरीयत अगर मक़सूद है तो.....मस्हफ़े रूख़ गौहर समाये कोई
गौहरीयत में ख़ू इबादत है.....ख़ूए गौहर से जगमगाये कोई
गौहरी रंग चढ़ाओ ऐसा कि.....रंग किसी का भी चढ़ ना पाये कोई
इस्मे गौहर में राज़ पिनहा है.....इस्मे गौहर में सिमट जाये कोई
यूँ पुकारो गौहर को उल्फ़त से.....बहरे गौहर में डूब जाये कोई
यूँ बसे जानो तन में गौहर कि.....ग़ैर की जगह रह ना जाये कोई
इस्मे गौहर से है फ़रोग़े इश्क़.....काश यूनुस ये समझ पाये कोई

21 जून 2003 लंदन

तमसील

किस तौर बयाँ हो सके तारीफ़ गौहर की.....मद्दे मुक़ाबिल हो कोई तमसील गौहर की
जोदो सख़ा की शान कि एहसान खुदा पर.....महबूबे रब का सर उठा इक नज़रे गौहर थी
जो वादए फ़रदा किया ख़ामोश निभाया.....बरदाश्त की मेअ़राज थी ये सबर गौहर की
मेहदी का भेष भर के वो सूए जहाँ अआया.....दो-चार गुल खिले यही हालत है समर की
सुन लो मज़ार हस्ती में मदफ़न है तो मुर्दा.....निकले कफ़न को फ़ाड़ के क़िसमत है शरर की
मंज़ूम बयाँ इश्क़ की तालीम हो तो हो.....पढ़ता नहीं है बात कोई इश्क़ नसर की
क्यों इब्तेलाये जुस्तजू रखती है मुज़तरिब.....वारफ़्तगी इश्क़ अ़ता नज़र गौहर की
पैग़ामे इश्क़ जुस्तजू पैदा करे दिल में.....वो दिल कि जिसमें नज़र बसे सिर्फ़ गौहर की
मुजरिम हूँ अगर कुछ भी कहूँ अपनी ज़ुबाँ से.....आई गौहर से बात वही मैंने नशर की
अदना कहूँ, बदतर कहूँ कमतर कहूँ अहक़र.....पर किसके मुक़ाबिल है ये तहक़ीर बशर की
यूनुस तू है अहक़र इसे इज़्ज़त से ना देखो.....ठोकर में रहे उफ़ ना करे हाये कसर की

30 जून 2003 लंदन

सूए अ़दम

क्या मुझे तुम कभी भुला दोगे.....मेरी बेताबियाँ मिटा दोगे
सोज़े इश्क़े गौहर में जलता हूँ.....और तुम क्या मुझे सज़ा दोगे
पहले दिल मायेले सकूँ ही था....अब सकूँ किस तरह दिला दोगे
नार नमरूद की इस दुनिया को....कैसे गुलज़ार तुम बना दोगे
ग़ज़लें मेरी ये शायरी तो नहीं.....नक़्शे गौहर को क्या दुआ़ दोगे
इश्क़े गौहर की लौ सलामत है....शम्मए गौहर को क्या बुझा दोगे
जा रहा हूँ सूए अ़दम यूनुस.....हब्स बेदम को क्या हवा दोगे

25 मार्च 2002 लंदन

मुश्के दहन

लब हाये जामे रियाज़ से अंग–अंग में गौहर बसा
चश्म हाये बामे रियाज़ से संग–संग मेरे दिलबर चला
हमराज़े रूह दर ख़िल्वतम माशूक़े राज़े नियाज़ हस्त
चः हाले यक मौजे नफ़स, हाले मनम गौहर समा
अक़ाए गोहर चः मी कुनंद मन अज़ बगोयम दिल बरम
हाले गुमॉं चः वारफ़तगी मन अंदरूँ गौहर हक़ा
मुश्के दहन बा दहने रूह, नक़्शे तूई बाक़ी बचा
मुश्के गौहर की लै बनी तब मिसरए गौहर बना
धोका नज़र, नज़रें मकर, इंज़ाए रूह का है सबर
हूँ मुंतज़िर हूँ वस्ले यार, इस दहर का गौहर नशा
ना वाक़िफ़े लिल्लाहियत, ता हाले मुस्तग़रक़ गौहर
गुम गश्ता अज़ मन गौहरम दानम नमी गौहर जुदा
मशकूरे मन अज़ इश्क़ तू , मजबूरे मन हाले ज़मॉं
तारीफ़ तू मुम्किन कहॉं नाराए मन गौहर सरा
यूनुस सगे गौहर जहॉं नतक़े मनम गुफ़तार तू
ता हशर मन गोयम बहक़ गौहर बया गौहर बया

3 जुलाई 2003 लंदन

विजय सत् गौहर जी महाराज

दाना ओ पानी और ये ज़िंदगानी अंजान अब मुझको लगने लगी है
अपने पराये की सोहबतो सूरत ना जाने क्यों मुझको चुभने लगी है
मुझको लगी है पिया के जिया की, जिया में अगन जाने कैसी लगी है
अगन जो बुझाये पिया बरखा लाये बस ऐसी पवन मुझको सजने लगी है
ये तूलानी ग़म की कोई क्यों मिटाये कोई मेरे मन के पिया को बताये
जुदाई के लमहों की ये लॉम्बी नागिन मेरे मन को मनकों से डसने लगी है
अमावस मिलन कब आयेगी साजन, कभो पार लाओगे अपने दुवारे
तुरंत मोड़ लाओ मिलन का समय अब, कि साँसों की उलझन भड़कने लगी है
प्रियतम से पूछो कि मन सोज़ी क्या है, उसी को ख़बर जिसका घायल हुआ मन
मनो कामनायें करो मोरी पूरी घड़ी मोरे जीवन की ढलने लगी है
विजय हो विजय हो विजय सत् गौहर की, अलापे है माला मोरे मन की यूनुस
गौहर जी को ढूँढे हैं नैना हर इक पल, समय की दिशा अब बदलने लगी है

4 जुलाई 2003 लंदन

अंदाज़े जुनूँ

कफ़न जुनूँ का मिला जिसको गौहर शाही से
पैराहन इश्क़ हुआ दीद की लैलाई से
अंकही बात भी कह देता है अंदाज़े जुनूँ
ख़ौफ़ रखता नहीं इस दुनिया की रूसवाई से
ढल गई फ़ितरते इंसॉं, फ़रोग़े इश्क़ हुआ
लहर बनी है बहरे इश्क़ की इठलाई से
हरमे इश्क़ में अहरामे जुनूँ बॉंधा है
तवाफ़ पेशे नज़र रूह की पैराई से
बुझ गई जागती ऑंखें तो यार को देखा
रूह बिसमिल बनी अजनबी हरजाई से

रूख़े आइना

वही झलके जो है पेशे आइना, दरे आइना कोई और है
मअ़कूस है रूख़े आइना पसे आइना कोई और है
पेशे नज़र मनजूर है जबकि नज़र पसे मंज़री
मंज़र की है ये दास्तॉं दरीं आइना कोई और है

5 जुलाई 2003 लंदन

नज़रे गौहर से जले है शम्मए गौहर

खुद गौहर ने जलाई है जो शमा फ़क्त उसकी लौ मैं बढ़ा रहा हूँ
रूख़े यार की देके जुस्तजू उन्हें इश्क़ की शान पे चढ़ा रहा हूँ
रह गोश बदिल सुन ज़रा, नये राज़ दिल ये सुनाता है
उसी दिल को ख़बर है यार की उसी दिल की कही किये जा रहा हूँ
कभी रूह के मशवरे भी सुनता हूँ कभी इसकी कसक भी चुभती है
कभी अना की बेचैनी से निहाँ सूएदार चढ़ा जा रहा हूँ
कभी नफ़्स की फ़रमाइशें कि बैठाओ सोहबते यार में
कभी जिस्म के तक़ाज़ों पे चंद आँसू बहाये जा रहा हूँ
कभी सिर्री के राज़े चमन और ख़फ़ी के असरारे जमीअ़
कभी अख़फ़ा के छुपे भेद मैं सरेआम किये जा रहा हूँ
यही पैग़ंबरों को हुई ख़लिश कभी वलियों को ये हुई फ़िकर
कभी हैरत हुई यूनुस तुझे ये मैं क्या किये जा रहा हूँ

5 जुलाई 2003 लंदन

रियाज़ी

गर मारना है मुझको तो ख़ंजर बदिल करो
ताकि गवाह हो नक़्शे गौहर, क़त्ले दिल करो
है मारना यही कि मिटा दो रियाज़ी नक़्श
मैं हूँ मुक़ैयद रमज़े गौहर, तुम पहल करो
अंदाज़ बताते हैं अ़दूए गौहर कि अब
जॉं निसारे रियाज़ से जंगो जदल करो
गौहर के नामे नामी पे हाज़िर है मेरा सर
अब ख़ंजरो दिशनाम से गौहर वसल करो
लेनी है मेरी जान तो आगाह रहो तुम
गौहर है जाने दिल, मेरा दिल क़तल करो
ये जिस्म मुश्तेख़ाक मेरा, मुस्तआ़रे जहॉ है
रूहे रियाज़ में है मेरी रूह क़तल करो
मुज़ूरे नज़र हूँ, मैं मज़लूमे गौहर का
ज़ालिम, अब इंतेहाये ज़ुल्म से अ़दल करो
है फ़ितरते इस्लाम में क़त्ताल अज़ल से
क़तल वफ़ाए रियाज़ पर तुम क्यों बदल करो
किस किस को बताऊँ कि मैं मक़्तूले अज़ल हूँ
ढूँढो मेरे क़ातिल को, मेरी जॉ सहल करो
तलवारे रियाज़ लौहो क़लम रियाज़ है
यूनुस सुनो दुशनाम, मगर तुम फ़ज़ल करो

अ़र्के गौहर

किसी के इश्क़ के रूलना, किसी वहशत से क्या कम है
ये आँखें बारे ग़म से रोयें, क्या ख़ूने जिगर कम है
मैं गुमराही हूँ बातिल हूँ, मेरा पेशा है इब्लीसी
सिवाये रियाज़ के मेरी ये गर्दन क्या कहीं ख़म है
मुझे बेचैन रखती है गौहर के लम्स की ख़ुशबू
ये आँसू अ़र्के गौहर हैं मेरी गर आँख पुर्नम है
बुझा दो आईनए दिल में जलती शम्मे गौहर को
इसी के कुफ़्र से काफ़िर हुआ, क्या ये कुफ़र कम है
ना घबरा ऐ दिले नादाँ तुझे अब मौत आनी है
सनाए रियाज़ पे गर्दन कटे फिर तुझको क्या ग़म है
क़तरए कुफ़्र, बहरे रियाज़ में जब ज़म हुआ यूनुस
रियाज़े कुफ़्र है तू अब भला तुझको क्या ग़म है

रक़्से इश्क़

रक़्स कर रियाज़ी शरर पर तू महे महमिल नहीं
जलवागर है फ़ेलए गौहर तू बख़ुद फ़ाएल नहीं
लिख दे दस्तूरे रियाज़ और मैकशी को आम कर
है मुख़ातिब क़ौले गौहर, शर कोई हायेल नहीं
क्यों छुपाऊँ राज़े गौहर क़ुर्बतुस्साअः है
ग़ैब की उर्यानियॉं तो आमदे ज़ाएल नहीं
पूछने से पेशतर ही राज़ उमडे आये हैं
कर कुशादा गुफ़्तगू , आदम में तू शामिल नहीं
सुन ख़बर, मजबूर से, दिलचूर से महमूर से
पूरी सुनले गर परेशानिये दिल हायेल नहीं
कसरते आराईये ज़ौक़ ना समझ की है दलील
जिंसे अल्लाह को ना समझे कोई क्यों मायेल नहीं
तूरे गौहर दिल बना और चश्म नारे तूर फिर
देख जलवे रियाज़ के इसमें तो कुछ मुश्किल नहीं
ज़म किया इस रूह को रूहे रियाज़ में अब ग़म नहीं
शोरे महशर, फ़िक्रे महशर की मुझे हलचल नहीं
वो ख़ुदा का ख़ौफ़ रखें जिनकी फ़ितरत ख़ौफ़ है
मेरी फ़ितरत रियाज़ है, मेरी ख़ुदा मंज़िल नहीं
कुफ़्र और इस्लाम की मानिंद शतरंजे जहॉं
मैं परे हूँ आलमे जंगो जदल का दल नहीं
कूफ़ियों की तर्ज़ पे फिरते हैं यॉं अब अहले दिल
मैं हूँ इब्ने रियाज़ मुझको तो वफ़ा मुशकिल नहीं
मैं राज़ों की इक गुत्थी क्यों सुलझ पाऊँ कभी
मैं जहाने ग़ैर की मुशकिल हूँ मेरा हल नहीं
बहरे हस्ती कर चुका है ग़र्क़ बहरे वस्त में
मैं हूँ मेराजे बहर में, वॉं कोई साहिल नहीं

सुर्अते रफ़तारे रूह से देखता हूँ क़सरे रियाज़
ये सफ़र रफ़तारे रूह का हुज्जते कामिल नहीं
किस चमन के फूल हो, पूछे हैं गुलज़ारे वतन
लालओ गुल की तरह हूँ , पर यहॉं का गुल नहीं
रूयाए सादिक़ा में रूए रियाज़ ढूँढे है मुझे
क्या वहीं से हूँ जहॉं पर कोई भी शामिल नहीं
इक तिकोने मेहदी इस नासूत में उरियॉं हुआ
मैं तिकोने रियाज़ में पूशीदा हूँ हासिल नहीं
जिस तरह से चॉंद और सूरज तुम्हें मंज़ूर हैं
उस तरह ही हम भी हैं मख़मूर पे महफ़िल नहीं
क्यों तमन्नाए रूख़े ज़ेबाए जॉं तुझसे करूँ
तुझमें मिट कर तू ही ठहरा मेरा कोई पल नहीं
गुफ़तगू मेरी परेशॉं हाल रखती है मुझे
सरगुज़िश्ते दिल कहूँ किस दिल से कोई दिल नहीं
ख़ुद नुमाई क्यों झलकती है तुम्हारे क़ौल से
क़ौले गौहर फ़ेले गौहर से है मैं फ़ाएल नहीं
मेरी मंशा है रियाज़ और रियाज़ की मंशा हूँ मैं
मैं रियाज़ी फ़िक्र हूँ मक़सूदे हाले कुल नहीं
जब तलक ज़ेबाए हस्ती बज़्म में मौजूद है
मैं हूँ इब्नुल वक़्त मेरा लमहा कोई पल नहीं
गुफ़तगूए यार करने को जिगर कावी करूँ
गुफ़तगूए यार बहलावा है दिल का हल नहीं
मेरी मौजों के तलातुम ख़ेज़ बहरे रियाज़ में
रियाज़ ही मल्लाह है मेरा अब कोई मुशकिल नहीं
यूनुस नापैद ग़ोता ज़न है बहरे रियाज़ में
जब उठाये सर तो कहना इसका कोई कल नहीं

बुते ज़िंदा का सनम

मेरा होना ही तेरा होना है.....तेरे होने को कोई क्या जाने
तन मेरा, तेरे मन की परछाईं.....मन मेरा क्या है, कोई क्या जाने
रूह की ख़िलवतों में है जलवा.....क़ल्बे यूनुस में है सनम ख़ाने
इब्तिदा जिसकी गौहर शाही है.....इंतिहा उसकी रियाज़ ही जाने
जलवते गौहर, तख़्लियए रियाज़ ही था.....जलवए रियाज़ कोई क्या जाने
तू बुते ज़िंदा का ज़िंदा है सनम.....मन के मंदिर को संत ही जाने
तुझी से हर्म है क़ायेम, तुझी से बुत ख़ाने.....ये और बात है दुनिया ना तुझको पहचाने
किसी के मन में समाये हो देवता की तरह.....और दिलो जान से कोई तुम्हें ख़ुदा मानें
बुते शरीर, शिवाला तेरी चिंगारी का.....सीमाए आत्मा है, नर्गो स्वर्ग के ख़ाने
बुते पिंदार, शयातीन के स्वामी हैं.....मेरा मन नारे नर्ग ही जाने
तू रियाज़ी है, शहबाज़ रियाज़े जनना है.....क़ल्बे मुर्दार तेरी परवाज़ से हैं बेगाने
अल्लाह किस बुत का नाम है यूनुस.....हम हैं बस रियाज़ के ही परवाने

अलूरा

कसॉ बसॉ गुमॉ समॉ जेह चिस्त पिंदॉ मिन.....नख़र बसर समर हस्तम नमी चः शर्माये

क़ल्ब पे जिसके सब्त हक़ हो तो.....वो भला हक़ से क्यों मुकर जाये
आमदे हक़ वजूदे हक़ से है.....बातिल ग़ैर क्यों ठहर जाये
पस ख़ुदी तुख़्म का तक़ाज़ा करे.....आबयारी से फिर शजर आये
गौहरी तुख़्म बतने क़लबी में.....इश्क़े हमली से तिफ़ले नर आये

चूँ शूद अज़ इश्क़ दिल सलीम.....तअ़ूम वस्लो इश्क़ रा बा शुद अ़लीम

वफ़ा के अ़हद से पहले जलाओ शम्मए इश्क़ .....तब ही ज़ियाए इश्क़ से वफ़ा समर पाये
फ़िराक़ो हिज्र है क़तरा, वस्ल बहर होना.....शाग़िले बहर हो कोई तो क्यों हिज्र आये
मिस्ले क़तरा, फ़नाए बहर होजा.....रूह जाये तो इश्क़ घर पाये
माहि़ये ग़ैर मनम मन वजूद माही़ हस्त.....मनम हस्तम वजूदे रियाज़ मन गौहर साये

ज़ंगार नफ़्स चूँ शूद साफ़ियो पाक.....नक़्शहा बीनी गौहर अज़ ख़्वाबनाक

तलाशे क़सरे रियाज़ छोड़, ख़ुद क़सर बन जा.....वजूदे रियाज़ से हर क़ल्ब बन क़सर जाये
मनम दुख़्ख़ान हस्तम वलूनारूल इश्क़ वजूद.....मनम यक शोअ़ला अलूनारूल इश्क़हू बर जाये
अला इला उूला औलम अअ़लम अलूरियाज़.....अलूरा, अलिफ़ लाम रा रियाज़ उूनसर आये

गौहरी अज़ गौहर शाही

ज़ीस्त मिस्ले आबगीना लम्हए हयात है
बे सबाती इस क़दर कि लम्हा भर की साअ़त है
आदमीयत शरमसार, इंसानियत का क़हत है
रूहानियत सर को झुकाये महवे शिकायात है
अहले बातिन मोख़मसह में तर्के इल्तेफ़ात है
गिर्यए अफ़लाक से सहमा ये मौजूदात है
नख़्ले मीना सहराए ज़ुल्मत कदा में दब गई
इक पयामी चीख़कर बोला ये क्या ज़ुल्मात है
मैं भी था मौजूद ख़ामूशी से सब कुछ देखता
गोशए इश्क़म दरीं गौहर की करामात है
अरग़वानी इक शुआअ़ आई समाई जा बजा
आफ़ताबी उस शुआअ़ ने फिर कही इक बात है
गौहरी अज़ गौहर शाही, बे गौहर बेज़ारगी
नफ़्स की दीवानगी तख़मीना हिजाबात है
इक तजाहुल ये कि ख़ुद से भी शनासाई नहीं
इक तग़ाफ़ुल ये कि ख़ुद की मौत ख़ुद के हाथ है
एक दिल ऐसा कि दलदल की तरह धँसता गया
एक दिल ऐसा जहाँ बस इश्क़ की बोहतात है
एक नफ़्स ऐसा जहाँ दावों का बोसीदा है ढेर
एक नफ़्स ऐसा जहाँ हर लम्हा मुनाजात है
शायेरी होती नहीं यूनुस कभी अल्फ़ाज़ की
पैरहन अल्फ़ाज़ का है ख़ज़ने हिकायात है

अफ़आ़ल निहॉं

तेरे अग़राज़ मुबहिम हैं तेरे अफ़आ़ल निहॉं
तेरे असरार बहम हैं तेरी हर चाल फ़सॉं
तेरी पेशानी में पिंहॉ है ज़माने की नमूद
तेरे ख़याल में मौजूद ख़दो ख़ाले ज़मा
कभी तू शोला, अनवारे तारगीये जहॉं
कभी तू वस्फ़े हमा ज़ात का इक ह़ाले गुमॉं
तू मेरे संग है हक़्क़ा क़ब्ल अज़ वक़्ते जहॉं
यूनुस फ़ॅस जाये ना मुमकिन है इस जाले जहॉं

ख़ूए शाही

भेस भर के मेहदी का आया यहाँ मौलाए कुल
जिसका डंका बजता है कौनो मकाँ, हर जाये कुल
मक़सदे गौहर हुआ कि हर जौहरे नायाब को
अपने मन के देश में कर दे उसे सरमाये कुल
बा इरादा हो के जब सूए ज़मीं आया गौहर
ढूंढने निकला वो इस ख़ित्ते पे भी अनक़ाये गुल
चलते-चलते इक मुक़ामे इश्क़ वो गोया हुआ
मक़सदे पिनहाँ बता कर कहता था कि हाये गुल
खूए शाही ढूंढता था खूए इंसानी में वो
जिसको देखा इज्ज़ का पैकर, किया अबनाये गुल
इक तरीक़े फ़क़र था सरमाया उसके हाथ में
यद्दे दोयम में लिये बैठा था वो ईक़ाये गुल
सह रहा था ख़ामुशी से सब तमन्नाओं का खूं
फिर अचानक, एक दिन लौटा वो पस असनाये कुल
आक़ाये बेमिस्ल ने फेहरिस्त जारी कर ही दी
पस गुलामी सब्त है आक़ा से और इसलाहे कुल
बशर ख़ूए शर है पस तू रियाज़ से बारियाज़ हो
ख़ूए गौहर सीख ताकि हो सके अजमाए कुल
ख़रक़े आदम, ख़ूए आदम में फ़ना रह जायेगा
ख़ूए गौहर, ख़ूए आदम से कहे इलक़ाये कुल
यूनुसे ख़ुश बख़्त रियाज़े हस्ती में महका रहे
वो रियाज़ी गुल कि जिसके हैं ये सब अजज़ाये कुल

लंदन 16 मार्च....2002